परमेश्वर का राज्य शिष्यता कार्यक्रम पुस्तिका

खण्ड 1

परमेश्वर का राज्य शिष्यता कार्यक्रम एक ऐसी खोज की यात्रा है जो प्रभु की महानतम महिमा के ज्ञान को प्राप्त करने, उसके महान प्रेम को जानने और उसका अनुभव करने, उसकी रूपान्तरण करने वाली शक्ति में जीवन व्यतीत करने और उसकी परिपूर्णता से भरपूर होने के अवसर प्रदान करती है। इसके परिणामस्वरूप आपका सशक्तिकरण होता है ताकि आप अन्य लोगों को परमेश्वर तथा उसके राज्य को जानने और उनका अनुभव प्राप्त करने के लिए सशक्त कर सकें।

कॉपीराइट और रॉयल्टी मुक्त 2016. अन्य निशुल्क संसाधनों के लिए www.jesuslovestheworld.info पर जाएँ अथवा info@jesuslovestheworld.info पर ईमेल करें।

यीशु के माध्यम से प्रकट हुआ परमेश्वर का प्रेम तब सिद्ध होता है जब हम उसे जान जाते हैं और उसके साथ जीवन व्यतीत करने का अनुभव प्राप्त करते हैं। “Jesus loves : the world” का उद्देश्य परमेश्वर के राज्य का प्रचार करना, उसकी शिक्षा देना और प्रशिक्षण प्रदान करना है, ताकि जितने लोग इच्छुक हैं वे परमेश्वर के सत्य में स्थापित हो जाएँ, उसके प्रेम में जड़ पकड़ लें और उसकी परिपूर्णता से भरपूर हो जाएँ।

विषय - वस्तु

परिचय 2

1: अदृश्य को देखना 3

2: उन्हें जानने के लिये 4

3: उन्होंने स्वयं को व्यक्तिगत बनाया 7

4: समय अब है 10

5: क्योंकि परमेश्वर बहुत प्रेम करते हैं 13

6: पिता का प्रेम 15

7: पुत्र का प्रेम 18

8: पवित्र आत्मा का प्रेम 20

9: मैं जैसा हूँ वैसे ही स्वीकृति 22

10: पहचान – आत्मा से जन्मे 24

11: प्रिय में स्वीकृति 28

12: सम्बन्ध 31

13: अन्य लोगों की वैसे स्वीकृति जैसे वे हैं 34

14: सम्बन्ध – समानता 37

15: सम्बन्ध – शिष्यता 40

16: सम्बन्ध – परमेश्वर का राज्य 42

प्रार्थना 44

10 बीज वर्कशीट 45

परिचय

परमेश्वर सब वस्तुओं का स्वयं के साथ पुनर्मेल, पुनर्स्थापना और नवीकरण करने के लिये सबकुछ प्रेम में होकर करते हैं। वह सम्बन्ध मूलक हैं, वह आन्तरिक हैं और वह व्यक्तिगत हैं।

प्रत्येक व्यक्ति द्वारा इन सत्रों का भरपूर लाभ उठाने के लिये मैं आपसे चाहता हूँ कि आप:

- परमेश्वर से सुनने की अपेक्षा करें
- प्रश्न पूछें
- अपने विचार साझा करें और चर्चा करें
- अपने उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें
- और, सबसे बढ़कर, इस यात्रा का आनन्द लें।

परमेश्वर की योजना

परमेश्वर के उद्धार का उद्देश्य, जिसकी योजना समय के आरम्भ से पहले ही बना ली गयी थी, यह है कि स्वर्ग और पृथ्वी में की सभी वस्तुओं को एक में, अर्थात मसीह यीशु के अधिकार तथा शासन के अधीन एकत्र किया जाये। मसीह यीशु में होकर परमेश्वर ब्रह्माण्ड में सामंजस्य तथा शान्ति पुनर्स्थापित करते हैं। मसीह में हम परमेश्वर के साथ एक हो जाते हैं।

इफिसियों 1:9-10...*जैसा कि मसीह के द्वारा वह हमें दिखाना चाहता था। परमेश्वर की यह योजना थी कि उचित समय आने पर स्वर्ग की और पृथ्वी पर की सभी वस्तुओं को मसीह में एकत्र करे।* (ERV)

शिष्य बनाने के लिये

यीशु ने अपना अधिकार अपने अनुयायियों (शिष्यों) को दिया ताकि जैसे-जैसे वे जीवनयात्रा में आगे बढ़ते हैं, वे पवित्र आत्मा की सहायता से लोगों को 'अनुयायी (शिष्य) बनाते जायें'।

मत्ती 28:18-20 *फिर यीशु ने उनके पास जाकर कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी अधिकार मुझे सौंपे गये हैं। सो, जाओ और सभी देशों के लोगों को मेरा अनुयायी बनाओ। तुम्हें यह काम परम पिता के नाम में, पुत्र के नाम में और पवित्र आत्मा के नाम में, उन्हें बपतिस्मा देकर पूरा करना है। वे सभी आदेश जो मैंने तुम्हें दिये हैं, उन्हें उन पर चलना सिखाओ। और याद रखो इस सृष्टि के अंत तक मैं सदा तुम्हारे साथ रहूँगा।* (ERV)

शिष्यता का आरम्भ परमेश्वर को और आपके लिये उनके प्रेम को जानने से होता है, और यह जानने से होता है कि वह कौन हैं, उन्होंने क्या किया है और वह क्या करेंगे। परमेश्वर के साथ उनके वचन में, उनकी उपस्थिति में, आराधना में, प्रार्थना में और अन्य विश्वासियों के साथ संगति में समय व्यतीत करने से परमेश्वर को जानने में हमें सहायता मिलती है।

जब हम इस शिष्यता कार्यक्रम की यात्रा में आगे बढ़ते हैं, मैं यीशु के नाम में प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु के आत्मा के द्वारा आप प्रभु की महिमा और आपके लिये उनके महान प्रेम के अधिक ज्ञान को प्राप्त करें, और परमेश्वर की सम्पूर्ण परिपूर्णता के परिमाप से भरपूर हो जायें, ताकि संसार प्रभु को जान सके। आमीन

सत्र 1: अदृश्य को देखना

सृष्टिकर्ता परमेश्वर सम्बन्ध मूलक हैं। उनका वचन व्यक्तिगत है।
उनकी उपस्थिति आन्तरिक है। उनकी सृष्टि उनकी साक्ष्य है।

आरम्भिक प्रार्थना

किसी से कहें कि सत्र का आरम्भ करने के लिये प्रार्थना करें।

आराधना

एक समूह के रूप में दो या तीन आराधना के ऐसे गीत चुनिए और गाइए जो स्वयं को हम पर प्रकट करने की परमेश्वर की इच्छा की घोषणा करते हों।

सामूहिक चर्चा

चर्चा करें कि परमेश्वर किन विभिन्न माध्यमों से स्वयं को हम पर प्रकट करते हैं? उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

भजन संहिता 19:1-6, रोमियों 1:20, होशे 12:10 और **उत्पत्ति 31:11** पढ़ें

परमेश्वर स्वयं को हम पर सृष्टि में प्रकट करते हैं। [जिसमें प्रकृति, परमेश्वर के नबी और परमेश्वर के स्वर्गदूत शामिल हैं]

व्यवस्थाविवरण 4:35-39, उत्पत्ति 15:1, 2 राजाओं 5:1 और **2 राजाओं 5:14-15** और **यूहन्ना 9:1-7** पढ़ें

परमेश्वर स्वयं को हम पर आश्चर्यकर्मों में प्रकट करते हैं। [जिसमें चिह्न और चमत्कार, दर्शन और चंगाई शामिल हैं]

लूका 24:27, यूहन्ना 20:31 और **भजन संहिता 33:6-9** पढ़ें

परमेश्वर स्वयं को हम पर अपने वचन में प्रकट करते हैं। [जिसमें लिखित और उच्चारित वचन शामिल हैं]

यूहन्ना 1:14-18, 14:6-7 और **इब्रानियों 1:1-4** पढ़ें

परमेश्वर स्वयं को हम पर यीशु में प्रकट करते हैं।

यूहन्ना 16:13-15 और **1 यूहन्ना 5:6** पढ़ें

परमेश्वर स्वयं को हम पर अपने आत्मा के द्वारा प्रकट करते हैं।

गवाही दें

प्रत्येक व्यक्ति से दो या तीन वाक्यों में यह बताने के लिये कहें कि परमेश्वर ने स्वयं को उन पर कैसे प्रकट किया है।

धन्यवाद की समापन प्रार्थना

किसी से कहें कि वह इस बात के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करे कि वह स्वयं को हम पर प्रकट करना चाहते हैं।

सत्र 2: उन्हें जानने के लिये

सृष्टिकर्ता परमेश्वर समय और स्थान के आयामों से परे हैं,
फिर भी हमारे अस्तित्व के समय और स्थान में वह स्वयं को व्यक्तिगत बनाते हैं।

आरम्भिक प्रार्थना

किसी से कहें कि सत्र का आरम्भ करने के लिये प्रार्थना करें।

आराधना

एक समूह के रूप में दो या तीन आराधना के ऐसे गीत चुनिए और गाइए जो परमेश्वर की महानता की घोषणा करते हों।

परिचय

पहले सत्र में हमने उन विभिन्न माध्यमों को सीखा जिनके द्वारा परमेश्वर स्वयं को हम पर प्रकट करते हैं। जब हम बाइबल—हमारे लिये परमेश्वर के व्यक्तिगत प्रेम पत्र—को पढ़ते और अध्ययन करते हैं, हम उनके विषय में बहुत कुछ सीखते हैं। यहाँ तक कि प्रथम शब्द भी, *'आदि में परमेश्वर ने...सृष्टि की'* हम पर यह प्रकट करते हैं कि, जैसे भी और जब भी आदि हुआ, परमेश्वर वहाँ थे, और उन्होंने सृष्टि की। परमेश्वर को और अधिक जानने के लिये हम बाइबल में दर्ज परमेश्वर के तीन दर्शनों का अध्ययन करेंगे।

बाइबल अध्ययन - परमेश्वर के दर्शन - यहेजकेल

जिस व्यक्ति पर परमेश्वर स्वयं को प्रकट कर रहे होते हैं, उसकी आवश्यकता के अनुरूप ही वह स्वयं को उस पर प्रकट करते हैं। हम यहेजकेल को दिये गये परमेश्वर के दर्शन का अध्ययन करेंगे।

दर्शन का सन्दर्भ

यहेजकेल एक नबी तथा परमेश्वर का याजक था। यहेजकेल, पुरातन इस्राएल के बारह गोत्रों में से दो गोत्रों के लोगों के साथ, एक परदेश में बन्दी था **(यहेजकेल 1:1)**। वे अपने आराधना के स्थान, यरूशलेम नगर, से बहुत दूर थे। वे विद्रोही लोग थे, जो पराये देवताओं की उपासना कर रहे थे। इस कारण परमेश्वर अपने नबी तथा याजक यहेजकेल के पास एक दर्शन के माध्यम से शब्दों से बनी एक तस्वीर भेजते हैं **(यहेजकेल 1:3)**।

यहेजकेल 1:15-21 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें एक से अधिक बार पढ़ते रहें।

सामूहिक चर्चा

चर्चा करें कि इन बाइबल पदों में कौन सी पाँच बातें लिखी गयी हैं। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

पद 15 जीवधारी

पद 16-17 पहिये—एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते हुए।

पद 18 आँखें

पद 19 भूमि—पहिये भूमि पर से उठते हैं।

पद 21 आत्मा

मूल पाठ को गलत अर्थ देने से बचने में सहायता के लिये मूल पाठ के विषय में निम्नलिखित प्रश्न पूछें:

इन पदों में **कौन** पात्र हैं? **यहेजकेल 1:1-3** पढ़ें

यहेजकेल, परमेश्वर, बन्दी (पुरातन इस्राएल के दो गोत्रों के लोग), कसदी

कौन बोल रहा है?

'मैं' यहेजकेल।

वह **किससे** बात कर रहा है? **यहेजकेल 1:28-2:5** पढ़ें

पुरातन इस्राएल के दो गोत्रों से।

पात्र एक-दूसरे के साथ **किस प्रकार** बातचीत करते हैं?

परमेश्वर एक दर्शन में स्वयं को यहेजकेल पर प्रकट करते हैं और फिर उससे बात करते हैं। यहेजकेल ध्यान देता है और सुनता है।

यह सब **कहाँ** पर हुआ?

कसदियों के परदेश में नदी के पास।

यह सब **कब** हुआ—यीशु के माँस और लहू बनने, क्रूस पर मरने, मृतकों में से जी उठने तथा स्वर्गारोहण से पहले या बाद में?

जब इस्राएल कसदियों के देश में बन्दी था। यीशु के माँस और लहू बनने से पहले।

पहिये **क्या** दर्शाते हैं?

पूर्व की संस्कृतियों में पहिया गतिशील जीवन या जीवनचक्र को दर्शाता है, जहाँ समय का कोई आदि और अन्त नहीं है।

गतिशील पहिये परमेश्वर के विषय में क्या दर्शाते हैं?

परमेश्वर सर्वव्यापी हैं। वह यरूशलेम के मन्दिर तक या किसी एक प्रान्त अथवा देश तक सीमित नहीं हैं। उनका न तो कोई आदि है और न ही अन्त। परमेश्वर अनन्त हैं...जो सारे समय और स्थान के आयामों पर परमेश्वर हैं।

आँखें परमेश्वर के विषय में क्या दर्शाती हैं? **यहेजकेल 8:12** पढ़ें

परमेश्वर सबकुछ देखते हैं, लोगों का विद्रोह, उनकी निर्बलताएँ, उनकी शारीरिक लालसाएँ, यहाँ तक कि उनके द्वारा की गयी पराये देवताओं की उपासना भी, फिर चाहे वह गुप्त में ही क्यों न की गयी हो। फिर भी, परमेश्वर अपने लोगों को ऐसे बन्धनों से मुक्त करना चाहते हैं।

ये पद **क्यों** लिखा गये थे? **यहेजकेल 11:16-25** पढ़ें

परमेश्वर ने स्वयं को सम्पूर्ण पृथ्वी का परमेश्वर, सर्वज्ञानी, सर्वदर्शी और सर्वशक्तिमान परमेश्वर प्रकट करने के द्वारा यहेजकेल को प्रोत्साहन दिया। यहाँ तक कि परदेश में भी, परमेश्वर यहेजकेल तथा लोगों के संग हैं। वह अपने लोगों को उनकी शारीरिक लालसाओं और पराये देवताओं की उपासना से मुक्त कराना चाहते हैं।

इन पदों में ऐसी कुछ बातें **क्या** हैं जो आज भी वैसी ही हैं?

परमेश्वर कल, आज, और युगानुयुग एक समान हैं। वह सभी स्थानों के परमेश्वर हैं, सर्वज्ञानी और सर्वदर्शी परमेश्वर हैं, लोगों को उनकी शारीरिक लालसाओं और पराये देवताओं की उपासना से मुक्त कराना चाहते हैं।

आज हमारे लिये इसके **क्या** मायने हैं? समूह में चर्चा करें।

यह जानने के, कि परमेश्वर सभी स्थानों के परमेश्वर हैं, सर्वज्ञानी और सर्वदर्शी परमेश्वर हैं, मायने यह हैं कि चाहे हम कहीं भी हैं, चाहे हमारी निर्बलता कोई भी हो, चाहे हमारे हालात कैसे भी हों, परमेश्वर हमारे संग रहते हैं। वह स्वयं को हम पर प्रकट करना चाहते हैं और हमारी चिन्ता करते हैं।

इस सत्र में से आप परमेश्वर के विषय में **कौन सी** एक बात सीखते हैं?

परमेश्वर समय और स्थान के आयामों से परे हैं। परमेश्वर के लोग चाहे कहीं पर भी हों और चाहे किसी भी हालात में हों, परमेश्वर उनके संग रहते हैं। परमेश्वर स्वयं को प्रकट करते हैं, ताकि यहेजकेल और लोगों को यह आश्वासन दे सकें कि वह परदेश में भी उनके संग हैं। परमेश्वर हालात से सीमित नहीं होते। परमेश्वर हमेशा हमारे संग रहने में, हमारे साथ सम्बन्ध में रुचि लेते हैं, और सदैव देखते हैं, हमारा ध्यान रखते हैं, उन लोगों को सदा से जानते हैं...जो उनके पास आयेंगे और जो उन्हें ठुकरा देंगे, फिर भी वह प्रेम में दृढ़ बने रहते हैं। यीशु ने सभी के लिये मृत्यु सही, हाँ, उनके लिये भी, जिनके विषय में वह जानते थे कि वह कभी उनका अनुकरण नहीं करेंगे। ओह, कैसा अद्भुत प्रेम है यह!

आपका व्यक्तिगत, व्यावहारिक प्रतिउत्तर/प्रार्थना **क्या** है?

धन्यवाद की समापन प्रार्थना

किसी से कहें कि वह इस बात के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करे कि वह स्वयं को हम पर प्रकट करना चाहते हैं।

सत्र 3: उन्होंने स्वयं को व्यक्तिगत बनाया

परमेश्वर सम्बन्ध मूलक हैं। उनका सम्वाद व्यक्तिगत है।

आरम्भिक प्रार्थना

किसी से कहें कि सत्र का आरम्भ करने के लिये प्रार्थना करें।

आराधना

एक समूह के रूप में दो या तीन आराधना के ऐसे गीत चुनिए और गाइए जो यह घोषणा करते हों कि परमेश्वर स्वयं को हम पर प्रकट करना चाहते हैं, और हमारी आवश्यकता के अनुसार हमारे पास उतर आते हैं।

बाइबल अध्ययन - परमेश्वर के दर्शन - याकूब

जैसा कि हमने सीखा है कि परमेश्वर स्वयं को सम्वाद के विभिन्न माध्यमों से प्रकट करते हैं। जिस व्यक्ति पर परमेश्वर स्वयं को प्रकट कर रहे होते हैं, उसकी आवश्यकता के अनुरूप ही वह स्वयं को उस पर प्रकट करते हैं। हम याकूब को दिये गये परमेश्वर के दर्शन का अध्ययन करेंगे।

दर्शन का सन्दर्भ

याकूब, जो पुरातन इस्राएल के बारह गोत्रों का पिता था, इसहाक तथा रिबका का पुत्र था। इसहाक अब्राहम और साराह का पुत्र था। अब्राहम और इसहाक, दोनों को परमेश्वर की ओर से एक व्यक्तिगत प्रतिज्ञा मिली थी। याकूब ने अपने बड़े भाई से छल किया और उसके पहलौठे के अधिकार को हथिया लिया। परिणामस्वरूप याकूब की माता रिबका ने याकूब से कहा कि वह अपने भाई के क्रोध से बचने के लिये भाग जाये। याकूब की आयु विवाह के योग्य हो चुकी थी, सो इसहाक ने याकूब को एक दुल्हन की तलाश में राहेल के परिवार के गोत्र में भेज दिया।

उत्पत्ति 28:10-22 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें कई बार पढ़ें।

सामूहिक चर्चा

इन बाइबल पदों के अपने अवलोकनों पर चर्चा करें। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

मूल पाठ को गलत अर्थ देने से बचने में सहायता के लिये मूल पाठ के विषय में निम्नलिखित प्रश्न पूछें:

इन पदों में **कौन** पात्र हैं?

परमेश्वर, याकूब और परमेश्वर के स्वर्गदूत।

कौन बोल रहा है?

परमेश्वर।

वह **किससे** बात कर रहा है?

याकूब से।

पात्र एक-दूसरे के साथ **किस प्रकार** बातचीत करते हैं?

परमेश्वर एक दर्शन में स्वयं को याकूब पर प्रकट करते हैं और फिर उससे बात करते हैं। याकूब ध्यान देता है और सुनता है।

परमेश्वर याकूब को अपना परिचय **कैसे** देते हैं? **पद 13 पढ़ें**

'मैं यहोवा, तेरे दादा अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का भी परमेश्वर हूँ।'

परमेश्वर द्वारा दिये गये स्वयं के परिचय से हमें याकूब के साथ उनके सम्बन्ध के विषय में **क्या** पता चलता है?

याकूब का परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं था। याकूब अपने पिता के परमेश्वर के विषय में जानता था, किन्तु स्वयं परमेश्वर का अनुभव उसने नहीं किया था।

पद 15 में परमेश्वर ने याकूब से **क्या** प्रतिज्ञा की?

परमेश्वर ने याकूब से प्रतिज्ञा की कि वह याकूब के संग हैं, याकूब जहाँ कहीं जायेगा वह उसे सुरक्षित रखेंगे, और वह याकूब को इस देश में लौटा ले आयेंगे; परमेश्वर उसे नहीं त्यागेंगे।

यह सब **कहाँ** पर हुआ? **पद 19** पढ़ें

लूज नामक एक नगर में, जिसका नाम अब याकूब ने बेतेल रखा है।

सीढ़ी **कहाँ** खड़ी थी और उसका सिरा **कहाँ** तक पहुँचा हुआ था? **पद 13** पढ़ें।

सीढ़ी पृथ्वी पर खड़ी थी और उसका सिरा स्वर्ग तक पहुँचा हुआ था।

सीढ़ी क्या दर्शाती है?

सीढ़ी लोगों के साथ परमेश्वर के सम्बन्ध को दर्शाती है। परमेश्वर स्वर्ग से पृथ्वी पर उतर आते हैं, स्वयं को हमारे पास ले आते हैं। परमेश्वर ने याकूब को स्वयं का व्यक्तिगत अनुभव कराया, पृथ्वी से एक दर्शन कराया जहाँ याकूब रहता था, स्वर्ग का दर्शन कराया जहाँ परमेश्वर रहते हैं।

यह सब **कब** हुआ—यीशु के माँस और लहू बनने, क्रूस पर मरने, मृतकों में से जी उठने तथा स्वर्गारोहण से पहले या बाद में?

यीशु के माँस और लहू बनने से पहले।

ये पद **क्यों** लिखे गये थे?

इस्राएल राष्ट्र की सच्ची कहानी और परमेश्वर के साथ उनके सम्बन्ध के द्वारा, हम परमेश्वर के विषय में बहुत कुछ सीखते हैं। परमेश्वर ने याकूब को स्वयं का व्यक्तिगत अनुभव कराया। परमेश्वर को अपने पिता या अपने दादा के परमेश्वर के तौर पर जानना पर्याप्त नहीं है। अब याकूब परमेश्वर को स्वयं जान जाता है और परिणामस्वरूप अपनी स्वयं की व्यक्तिगत प्रतिज्ञा प्राप्त करता है।

इन पदों में ऐसी कुछ बातें **क्या** हैं जो आज भी वैसी ही हैं?

परमेश्वर कल, आज, और युगानुयुग एक समान हैं। परमेश्वर स्वयं को व्यक्तिगत तौर पर और हमारी आवश्यकता के अनुसार प्रकट करना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं चयन करना है कि वह किसकी आराधना करेगा।

आज हमारे लिये इनके **क्या** मायने हैं?

याकूब को एक दर्शन मिला कि परमेश्वर स्वर्ग से उसके पास पृथ्वी पर आ रहे हैं। परमेश्वर माँस और लहू के मानवीय रूप में पृथ्वी पर उतर आये। मनुष्य का पुत्र, परमेश्वर का पुत्र, यीशु मसीह (अभिषिक्त)।

यूहन्ना 1:51 में यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि वे स्वर्ग को खुला हुआ और स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र (स्वयं यीशु) के ऊपर उतरते और ऊपर जाते देखेंगे। यीशु मसीह के जन्म, मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के द्वारा स्वर्ग खुल गया है। आज यीशु मसीह के माध्यम से, उनके आत्मा के द्वारा, हम परमेश्वर को व्यक्तिगत तौर पर जान सकते हैं। हमारी सीधी पहुँच परमेश्वर के पास हो गयी है। हमारे हालात चाहे जैसे भी हों, परमेश्वर प्रतीक्षा कर रहे हैं।

इस सत्र में से आप परमेश्वर के विषय में **कौन** सी एक बात सीखते हैं?

परमेश्वर स्वयं को लोगों पर उनकी आवश्यकता के अनुसार प्रकट करते हैं। याकूब को स्वयं परमेश्वर का अनुभव करने की आवश्यकता थी। हमारे पुरखों के परमेश्वर के विषय में जानना पर्याप्त नहीं है। हालाँकि याकूब ने गलत किया था, तो भी याकूब के सबसे अकेले समय में परमेश्वर स्वयं को उस पर प्रकट करना और आशीष देना चाहते थे। परमेश्वर एक सम्बन्ध मूलक परमेश्वर हैं। वह एक व्यक्तिगत परमेश्वर हैं। वह एक प्रेमी परमेश्वर हैं, जो आशीष देने को तैयार हैं। वह एक विश्वासयोग्य परमेश्वर हैं और अपनी सभी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेंगे।

आपका व्यावहारिक प्रतिउत्तर/प्रार्थना **क्या** है?

धन्यवाद की समापन प्रार्थना

किसी से कहें कि वह इस बात के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करे कि वह स्वयं को हम पर प्रकट करना चाहते हैं।

सत्र 4: समय अब है

उसे देखो जिसकी आँखें आग के समान हैं! जो उसे ग्रहण करते हैं, वे प्रेम, ज्योति, जीवन प्राप्त करते हैं। जो उसे ठुकराते हैं, वे नरक-दण्ड, अन्धकार, मृत्यु प्राप्त करते हैं।

आरम्भिक प्रार्थना

किसी से कहें कि सत्र का आरम्भ करने के लिये प्रार्थना करें।

आराधना

एक समूह के रूप में दो या तीन आराधना के ऐसे गीत चुनिए और गाइए जो यह घोषणा करते हों कि स्वर्ग का मार्ग यीशु हैं।

बाइबल अध्ययन - परमेश्वर के दर्शन - यूहन्ना

जैसा कि हमने सीखा है कि परमेश्वर स्वयं को सम्वाद के विभिन्न माध्यमों से प्रकट करते हैं। जिस व्यक्ति पर परमेश्वर स्वयं को प्रकट कर रहे होते हैं, उसकी आवश्यकता के अनुरूप ही वह स्वयं को उस पर प्रकट करते हैं। हम यूहन्ना को दिये गये परमेश्वर के दर्शन का अध्ययन करेंगे।

दर्शन का सन्दर्भ

यूहन्ना अपने विश्वास के कारण निर्वासन में था। कलीसिया सताव का सामना कर रही थी। मानवीय इतिहास के सर्वाधिक क्रूर और शक्तिशाली साम्राज्य—रोमी साम्राज्य—का शासनकाल था। अत्याचार और अलगाव की स्थिति में, यूहन्ना को परमेश्वर का उनके सम्पूर्ण वैभव, प्रेम और सामर्थ्य में दर्शन मिला। परमेश्वर सिंहासन पर थे और हैं और आने वाले हैं तथा उनका सामर्थ्य समस्त दुष्टता और सम्पूर्ण मानवीय इतिहास के सभी युगों के समस्त साम्राज्यों से कहीं अधिक उच्चतर है। यूहन्ना और सभी विश्वासी आश्वस्त हो सकते हैं कि दुष्टता का अन्त समीप है। यीशु ने इसे पराजित कर दिया है। दुष्टता के दिन गिने हुए हैं। परमेश्वर उन लोगों की प्रतीक्षा कर रहे हैं जो दुष्टता के अन्त से पहले उनके पास स्वेच्छा से चले आयेंगे।

आइए, यीशु के प्रकाशन और आने वाली बातों के एक लघु अंश को देखें।

प्रकाशितवाक्य 4:1-11 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें कई बार पढ़ें।

सामूहिक चर्चा

बाइबल के इन पदों में लिखी बातों पर एक-एक पद करके चर्चा करें। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

पद 1 स्वर्ग में खुला द्वार।

पद 2 स्वर्ग में एक सिंहासन और उस सिंहासन पर कोई बैठा है।

पद 3 सिंहासन के चारों ओर एक मेघधनुष।

पद 4 सिंहासन के चारों ओर चौबीस सिंहासन, और उन सिंहासनों पर बैठे चौबीस प्राचीन।

पद 5 सिंहासन में से निकलती बिजलियाँ, गर्जन और आवाज़ें। सात दीपक = परमेश्वर के सात आत्माएँ।

पद 6 काँच का समुद्र। चार प्राणी, जिनके आगे पीछे आँखें ही आँखें हैं।

पद 7 पहला प्राणी सिंह के समान है। दूसरा प्राणी बछड़े के समान है। तीसरे प्राणी का मुँह मनुष्य का सा है। चौथा प्राणी उड़ते हुए उकाब के समान है।

चारों प्राणी रात-दिन **क्या** कहते रहते हैं? **पद 8** पढ़ें
'सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर पवित्र है, पवित्र है, पवित्र है, जो था, जो है और जो आनेवाला है।' (ERV)

जब वे चारों प्राणी उसकी, जो सिंहासन पर बैठा है, आराधना करते हैं, तो चौबीस प्राचीन **क्या** करते हैं? **पद 9-10** पढ़ें

वे सिंहासन पर बैठने वाले के सामने गिर पड़ते हैं और उसकी आराधना करते हैं।

सिंहासन पर बैठने वाले की आराधना करते हुए चौबीस प्राचीन **क्या** कहते हैं? **पद 11** पढ़ें

"हे हमारे प्रभु और हमारे परमेश्वर! तू ही महिमा, आदर और शक्ति पाने को सुयोग्य है। क्योंकि तूने ही अपनी इच्छा से सभी वस्तु सरजी हैं। तेरी ही इच्छा से उनका अस्तित्व है। और तेरी ही इच्छा से हुई है उनकी सृष्टि।" (ERV)

स्वर्ग का खुला द्वार: जिस द्वार को यूहन्ना ने देखा वह यीशु के सिद्ध लहू के बलिदान का प्रतीक है, जिसने हमें धोकर शुद्ध कर दिया है। जब हमने स्वयं यीशु के लहू के बलिदान को ग्रहण कर लिया है, तो हमें हमारे भीतर परमेश्वर का आत्मा भी मिल गया है, हम पर और हमारे चारों ओर उसकी उपस्थिति भी मिल गयी है।

यीशु के कारण, अर्थात परमेश्वर जो माँस और लहू बन गये, हमारे जैसे बन गये, अपने जीवन का बलिदान दिया, मृतकों में से जी उठे और ऊँचे पर उठा लिये गये, परमेश्वर पिता के दायें जा विराजे, ताकि उनके आत्मा के द्वारा, हमारे लिये परमेश्वर के सिंहासन कक्ष में जाने का मार्ग खुल जाये।

वर्तमान में, दुष्टता से क्षतिग्रस्त इस संसार में परमेश्वर के साथ निरन्तर मुलाकात, संगति, परामर्श, सम्बन्ध, प्रेम और प्रकाशन के लिये हमारी आत्मा में परमेश्वर के सिंहासन कक्ष में पहुँच हो गयी है।

भविष्य में, हमारी आशा है कि परमेश्वर के सिंहासन कक्ष में हमारी पुनरुत्थित सिद्ध देहों में हमारी पहुँच होगी, जहाँ हम उन्हें आमने-सामने देखेंगे। वहाँ आँसू नहीं होंगे, पीड़ा नहीं होगी, बुढ़ापा नहीं होगा, रोग नहीं होगा। समय की परिपूर्णता में सबकुछ सिद्ध हो जायेगा।

मूल पाठ को गलत अर्थ देने से बचने में सहायता के लिये मूल पाठ के विषय में निम्नलिखित प्रश्न पूछें:

इन पदों में **कौन** पात्र हैं?

यूहन्ना, एक आवाज़, परमेश्वर (जो सिंहासन पर बैठे हैं), चार प्राणी, चौबीस प्राचीन, परमेश्वर के सात आत्मा।

कौन बोल रहा है?

लेखक यूहन्ना, आवाज़ (पद 1), चार प्राणी (पद 8) और चौबीस प्राचीन (पद 11)।

वह **किससे** बात कर रहा है? **प्रकाशितवाक्य 4:1** पढ़ें

यूहन्ना उस समय के और सभी युगों के विश्वासियों से बात कर रहा है।

आवाज़ **किससे** बात कर रही है? **प्रकाशितवाक्य 4:1** पढ़ें

आवाज़ यूहन्ना से बात कर रही है।

चार प्राणी **किससे** बात कर रहे हैं? **प्रकाशितवाक्य 4:8** पढ़ें

चार प्राणी सिंहासन पर बैठने वाले (परमेश्वर) की स्तुति कर रहे हैं।

चौबीस प्राचीन **किससे** बात कर रहे हैं? **प्रकाशितवाक्य 4:11** पढ़ें

चौबीस प्राचीन सिंहासन पर बैठने वाले (परमेश्वर) की स्तुति कर रहे हैं।

पात्र एक-दूसरे के साथ **किस प्रकार** बातचीत करते हैं?

यूहन्ना आत्मा में स्वर्ग में प्रवेश करता है, आवाज़ की ओर देखता है और सुनता है, चार प्राणी और चौबीस प्राचीन सिंहासन पर बैठने वाले (परमेश्वर) की स्तुति करते हैं।

यह सब **कहाँ** पर हुआ? **प्रकाशितवाक्य 1:9** और **प्रकाशितवाक्य 4:1** पढ़ें

पतमुस नामक टापू और स्वर्ग।

यह सब **कब** हुआ—यीशु के माँस और लहू बनने, क्रूस पर मरने, मृतकों में से जी उठने तथा स्वर्गारोहण से पहले या बाद में? **प्रकाशितवाक्य 1:17-18** पढ़ें

यीशु के माँस और लहू बनने, क्रूस पर मरने, मृतकों में से जी उठने तथा स्वर्गारोहण के बाद।

ये पद **क्यों** लिखे गये थे?

एकमात्र सच्चे परमेश्वर को प्रकट करने के लिये, जो सर्वशक्तिमान हैं, सर्वसामर्थी हैं, अनन्त हैं, सर्वज्ञानी हैं, पवित्र हैं, जो शासन और राज्य करते हैं, जिन्होंने सबकी सृष्टि की है, वह विश्वासयोग्य हैं तथा सारी स्तुति और आराधना के योग्य हैं। सभी युगों के विश्वासियों को प्रोत्साहित करने के लिये कि यीशु (खुला द्वार)—जो हर समय और प्रत्येक परिस्थिति में सिंहासन पर विराजमान रहते हैं—के द्वारा स्वर्ग में हमारी पहुँच हुई है।

इन पदों में ऐसी कुछ बातें **क्या** हैं जो आज भी वैसी ही हैं?

परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, सर्वसामर्थी, अनन्त, सर्वज्ञानी, पवित्र, जो शासन और राज्य करते हैं, जिन्होंने सबकी सृष्टि की है, वह विश्वासयोग्य हैं तथा सारी स्तुति और आराधना के योग्य हैं।

आज हमारे लिये इनके **क्या** मायने हैं?

जब हम यीशु द्वारा दिये गये स्वयं के माँस और लहू के बलिदान को स्वीकार करते हैं, तो आत्मा में हम उनकी उपस्थिति में प्रवेश कर सकते हैं, स्वर्ग में उनके सिंहासन के सामने किसी भी समय हियाव के साथ आ सकते हैं। यहाँ तक कि संघर्ष, अलगाव और सताव के समय में भी परमेश्वर सर्वोच्च शासन करते हैं और परमेश्वर हर समय स्वयं को हमारे लिये उपलब्ध बनाते हैं।

इस सत्र में से आप परमेश्वर के विषय में **कौन सी** एक बात सीखते हैं?

परमेश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वसामर्थी, पवित्र हैं, जो शासन और राज्य करते हैं, सबके सृष्टिकर्ता हैं तथा सारी स्तुति और आराधना के योग्य हैं। प्रतीक के रूप में यीशु स्वर्ग का मार्ग हैं, खुला द्वार हैं।

गवाही दें

प्रत्येक व्यक्ति से दो या तीन वाक्यों में यह बताने के लिये कहें कि परमेश्वर के दर्शन सत्रों में से परमेश्वर उनसे किस विषय में बात करते आ रहे हैं।

आपका व्यावहारिक प्रतिउत्तर/प्रार्थना **क्या** है?

सत्र 5: क्योंकि परमेश्वर बहुत प्रेम करते हैं

ज्ञान शक्ति है। उनके प्रेम की शक्ति को जानना।

आरम्भिक प्रार्थना

किसी से कहें कि सत्र का आरम्भ करने के लिये प्रार्थना करें।

आराधना

एक समूह के रूप में दो या तीन आराधना के ऐसे गीत चुनिए और गाइए जो परमेश्वर के प्रेम की घोषणा करते हों।

बाइबल अध्ययन - परमेश्वर का प्रेम

जैसा कि हम सीख चुके हैं कि सृष्टिकर्ता परमेश्वर, जो थे, और जो हैं, और जो आने वाले हैं, एक सम्बन्ध मूलक परमेश्वर हैं। परमेश्वर सबकुछ प्रेम के कारण करते हैं क्योंकि परमेश्वर बहुत प्रेम करते हैं। परमेश्वर का यह प्रेम हमारी समझ से परे है। हम परमेश्वर की कहानी, उनकी सच्ची प्रेम कहानी, बाइबल में से परमेश्वर के प्रेम के कुछ पहलुओं का अध्ययन करेंगे।

1 कुरिन्थियों 13:1-8 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें कई बार पढ़ें।

सामूहिक चर्चा

बाइबल के इन पदों में लिखे परमेश्वर के प्रेम के पहलुओं पर एक-एक पद करके चर्चा करें।
उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

पद 4 धीरजवन्त (क्रोध किये बिना लम्बे समय तक प्रतीक्षा करता है), कृपालु, डाह नहीं करता, अपनी बड़ाई नहीं करता, फूलता नहीं।

पद 5 अनरीति नहीं चलता, अपनी भलाई नहीं चाहता, झुँझलाता नहीं और बुरा नहीं मानता।

पद 6 कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है।

पद 7 लोगों को लेकर हार नहीं मानता, भरोसा करना कभी नहीं छोड़ता, आशा कभी नहीं छोड़ता, और कभी हार नहीं मानता।

पद 8 प्रेम कभी टलता नहीं और कभी समाप्त नहीं होगा।

इस प्रेम का स्रोत कौन है? **1 यूहन्ना 4:7-10** पढ़ें

सामूहिक चर्चा

चर्चा करें कि इन बाइबल पदों में परमेश्वर का प्रेम हमारे लिये कैसे प्रकट किया गया है? उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

परमेश्वर हमसे इतना प्रेम करते हैं कि उन्होंने अपने पुत्र को हमारे लिये माँस और लहू का बलिदान बनने, हमारे दण्ड को अपने ऊपर उठाने के लिये भेज दिया, ताकि हम उनके द्वारा जी सकें।

मूल पाठ को गलत अर्थ देने से बचने में सहायता के लिये मूल पाठ के विषय में निम्नलिखित प्रश्न पूछें:

इन पदों में **कौन** पात्र हैं? **1 यूहन्ना 4:7-10**

लेखक यूहन्ना, विश्वासी (प्रिय), यीशु (परमेश्वर का पुत्र) और परमेश्वर।

कौन बोल रहा है?

लेखक यूहन्ना।

वह **किससे** बात कर रहा है?

यूहन्ना उस समय के और सभी युगों के विश्वासियों से बात कर रहा है।

पात्र एक-दूसरे के साथ **किस प्रकार** बातचीत करते हैं?

यूहन्ना विश्वासियों को एक पत्र लिखता है।

यह सब **कब** हुआ—यीशु के माँस और लहू बनने, क्रूस पर मरने, मृतकों में से जी उठने तथा स्वर्गारोहण से पहले या बाद में?

यीशु के माँस और लहू बनने, क्रूस पर मरने, मृतकों में से जी उठने तथा स्वर्गारोहण के बाद में।

ये पद **क्यों** लिखे गये थे? **1 यूहन्ना 1:1-4 पढ़ें**

लेखक यूहन्ना यीशु के माँस और लहू बनने, क्रूस पर मरने, मृतकों में से जी उठने तथा स्वर्गारोहण का प्रत्यक्षदर्शी था। विश्वासियों के आनन्द को परिपूर्ण करने के लिये, यूहन्ना उनके लिये लिखता है और गवाही देता है कि यीशु के लहू के बलिदान पर विश्वास करने और उसे स्वीकार करने से उनके पाप क्षमा हो जाते हैं और वे शुद्ध हो जाते हैं।

इन पदों में ऐसी कुछ बातें **क्या** हैं जो आज भी वैसी ही हैं?

परमेश्वर, उनका असीम प्रेम, समस्त भूतकाल, वर्तमान, और भविष्य में परमेश्वर तथा एक दूसरे के विरुद्ध जितनी दुष्टता हमने बोली, सोची और की है, उन सभी के लिये उनका अनन्त बलिदान और क्षमा।

आज हमारे लिये इनके **क्या** मायने हैं?

जब हम यीशु द्वारा दिये गये स्वयं के माँस और लहू के बलिदान को स्वीकार करते हैं, तो आत्मा में हम शुद्ध हो जाते हैं और समस्त भूतकाल, वर्तमान, और भविष्य में परमेश्वर तथा एक दूसरे के विरुद्ध जितनी दुष्टता हमने बोली, सोची और की है, उन सभी के लिये हम अनन्त क्षमा प्राप्त कर लेते हैं। परमेश्वर का प्रेम असीम हैं। हम परमेश्वर के प्रेम पर भरोसा रख सकते हैं।

इस सत्र में से आप परमेश्वर के विषय में **कौन सी** एक बात सीखते हैं?

परमेश्वर प्रेम हैं, सिद्ध प्रेम।

गवाही दें

प्रत्येक व्यक्ति से दो या तीन वाक्यों में यह बताने के लिये कहें कि यह जानना, कि उनके लिये परमेश्वर का प्रेम असीम है, उनके लिये क्या मायने रखता है?

आपका व्यावहारिक प्रतिउत्तर/प्रार्थना **क्या** है?

सत्र 6: पिता का प्रेम

पिता की प्रसन्नता इसी में है कि परमेश्वरत्व की परिपूर्णता यीशु में वास करे,
और उनके द्वारा वह सब वस्तुओं का अपने साथ पुनर्मेल कर लें।

आरम्भिक प्रार्थना

किसी से कहें कि सत्र का आरम्भ करने के लिये प्रार्थना करें।

आराधना

एक समूह के रूप में दो या तीन आराधना के ऐसे गीत चुनिए और गाइए जो परमेश्वर के प्रेम की घोषणा करते हों।

बाइबल अध्ययन

परमेश्वर स्वयं के साथ एक सिद्ध सम्बन्ध में थे, और हैं, और आने वाले हैं। पिता, पुत्र यीशु, और पवित्र आत्मा, एक परिपूर्ण एकत्व हैं, एक में तीन व्यक्ति। एक परमेश्वर। हम परमेश्वर की कहानी, उनकी सच्ची प्रेम कहानी, बाइबल में से पिता के प्रेम का अध्ययन करेंगे।

पिता का प्रेम इतना महान है कि वह सबकुछ पुत्र को दे देते हैं।

कुलुस्सियों 1:19-20 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें कई बार पढ़ें।

सामूहिक चर्चा

इन बाइबल पदों में से पिता के प्रेम के विषय में अपने अवलोकनों पर चर्चा करें। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

पिता इस बात से बहुत प्रसन्न है कि परमेश्वरत्व की परिपूर्णता हमारे लिये यीशु में प्रकट हो। यीशु के माँस और लहू का बलिदान बनने से, सारी सृष्टि का परमेश्वर के साथ पुनर्मेल हो सकता है, उसे शान्ति प्राप्त हो सकती है। यीशु के बिना सिद्ध शान्ति है ही नहीं।

इन पदों में ऐसी कुछ बातें **क्या** हैं जो आज भी वैसी ही हैं?

परमेश्वर—उनका प्रेम, यीशु के माँस और लहू के बलिदान में प्रकट हुई उनकी परिपूर्णता। यीशु के बिना कोई शान्ति नहीं।

आज हमारे लिये इनके **क्या** मायने हैं? **कुलुस्सियों 1:21-22** पढ़ें

जब हम यीशु के माँस और लहू के बलिदान को स्वीकार करते हैं, तब हम परमेश्वर के शत्रु नहीं रह जाते। अब हम परमेश्वर के साथ सामंजस्य में आ जाते हैं, जैसे हैं वैसे ही स्वीकार कर लिये जाते हैं, और परमेश्वर के साथ सम्बन्ध में आ जाते हैं, परमेश्वर के समक्ष पवित्र और निर्दोष प्रस्तुत किये जाते हैं। परमेश्वर की दृष्टि में हम दोषी नहीं ठहराये जा सकते।

यूहन्ना 3:16-17 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें कई बार पढ़ें।

सामूहिक चर्चा

इन बाइबल पदों में से पिता के प्रेम के विषय में अपने अवलोकनों पर चर्चा करें। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

पिता का प्रेम बहुत महान है। उन्होंने यीशु में, जो माँस और लहू बने, क्रूस पर मरे, मृतकों में से जी उठे तथा स्वर्गारोहित हुए, हमें सबकुछ दिया है। परमेश्वर ने संसार को बचाने के लिये स्वयं को सौंप दिया ताकि हमने परमेश्वर अथवा लोगों के विरुद्ध जितनी दुष्टता बोली, सोची या की है, उन सभी के लिये वह माँस और लहू का अनन्त बलिदान बन जायें।

इन पदों में ऐसी कुछ बातें **क्या** हैं जो आज भी वैसी ही हैं?

परमेश्वर और उनका प्रेम। दुष्टता।

आज हमारे लिये इनके **क्या** मायने हैं? **यूहन्ना 3:18** पढ़ें

हम न्याय तथा दण्ड से सदा के लिये बचा लिये गये हैं। अब हम पर कोई दोष नहीं है। हमें अनन्त जीवन मिल गया है।

यूहन्ना 3:35 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें कई बार पढ़ें।

सामूहिक चर्चा

इन बाइबल पदों में से पिता के प्रेम के विषय में अपने अवलोकनों पर चर्चा करें। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

पिता का प्रेम इतना महान है कि वह सबकुछ यीशु को, पुत्र को दे देते हैं।

इन पदों में ऐसी कुछ बातें **क्या** हैं जो आज भी वैसी ही हैं?

परमेश्वर, उनका प्रेम और उनका दानी चरित्र।

आज हमारे लिये इनके **क्या** मायने हैं? **यूहन्ना 3:36** पढ़ें

जो कोई यीशु पर, परमेश्वर पुत्र पर, विश्वास करता है, उसे अनन्त जीवन मिलता है।

1 यूहन्ना 3:1 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें कई बार पढ़ें।

सामूहिक चर्चा

इन बाइबल पदों में से पिता के प्रेम के विषय में अपने अवलोकनों पर चर्चा करें। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

परमेश्वर हमसे इतना प्रेम करते हैं कि उन्होंने यीशु में हमें सबकुछ दे दिया है। हम उनकी सन्तान हैं। वह हमारे पिता हैं जो हमें उतना ही प्रेम करते हैं जितना अपने पुत्र से।

इन पदों में ऐसी कुछ बातें **क्या** हैं जो आज भी वैसी ही हैं?

परमेश्वर, उनका प्रेम और जितने लोग यीशु के माँस और लहू के बलिदान पर विश्वास करते और उसे स्वीकार करते हैं, वे सभी परमेश्वर की सन्तान हैं।

आज हमारे लिये इनके **क्या** मायने हैं?

हम परमेश्वर की सन्तान हैं, जैसे हैं वैसे ही स्वीकार किये गये हैं, उनके परिवार में गोद लिये गये हैं, सर्वदा उनके प्रेम के पात्र रहेंगे।

कुलुस्सियों 1:12-14 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें कई बार पढ़ें।

सामूहिक चर्चा

इन बाइबल पदों में से पिता के प्रेम के विषय में अपने अवलोकनों पर चर्चा करें। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

पिता हमसे इतना प्रेम करते हैं कि उन्होंने हमें अपने पुत्र के माँस और लहू के बलिदान के द्वारा इस योग्य बना दिया है कि हम वह सब प्राप्त करें जो यीशु के पास है, जो यीशु थे, हैं और होने वाले हैं। परमेश्वर के सन्तान के रूप में मसीह के संगी वारिस।

इन पदों में ऐसी कुछ बातें **क्या** हैं जो आज भी वैसी ही हैं?

परमेश्वर, उनका प्रेम, उनका दानी चरित्र, उनके पुत्र का माँस और लहू का अनन्त बलिदान।

आज हमारे लिये इनके **क्या** मायने हैं?

हम वह सब प्राप्त करते हैं जो यीशु के पास है, जो यीशु थे, हैं और होने वाले हैं। हम अन्धकार की शक्ति से मुक्त हो गये हैं। हम परमेश्वर के राज्य में हैं, उनके ज्योति के राज्य में, यीशु के संगी वारिस।

इस सत्र में से आप परमेश्वर के विषय में **कौन सी** एक बात सीखते हैं?

पिता का प्रेम।

गवाही दें

प्रत्येक व्यक्ति से दो या तीन वाक्यों में यह बताने के लिये कहें कि यह जानना, कि पिता उनसे कितना प्रेम करते हैं, उनके लिये क्या मायने रखता है?

आपका व्यावहारिक प्रतिउत्तर/प्रार्थना **क्या** है?

सत्र 7: पुत्र का प्रेम

परमेश्वर ने स्वयं को प्रेम में व्यक्तिगत बना दिया, ताकि हम प्रेम में उनके साथ सम्बन्ध मूलक हो सकें।

आरम्भिक प्रार्थना

किसी से कहें कि सत्र का आरम्भ करने के लिये प्रार्थना करें।

आराधना

एक समूह के रूप में दो या तीन आराधना के ऐसे गीत चुनिए और गाइए जो यीशु के माँस और लहू के बलिदान की घोषणा करते हों।

बाइबल अध्ययन

परमेश्वर स्वयं के साथ एक सिद्ध सम्बन्ध में थे, और हैं, और आने वाले हैं। पिता, पुत्र यीशु, और पवित्र आत्मा, एक परिपूर्ण एकत्व हैं, एक में तीन व्यक्ति। एक परमेश्वर। हम परमेश्वर के पुत्र, यीशु, के प्रेम के सम्बन्ध का अध्ययन करेंगे।

यीशु का प्रेम इतना महान है कि उन्होंने माँस और लहू का बलिदान बनने के लिये सबकुछ त्याग दिया। फिर भी, प्रत्येक दिन उनके प्रेम को अधिक से अधिक जानने से हमें उस जीवन, प्रेम, सत्य और सामर्थ्य की भरपूरी प्राप्त करने में सहायता मिलती है, जो परमेश्वर की ओर से है और स्वयं परमेश्वर है।

यूहन्ना 10:14-18 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें कई बार पढ़ें।

सामूहिक चर्चा

इन बाइबल पदों में से यीशु के प्रेम के विषय में अपने अवलोकनों पर चर्चा करें। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

यीशु का प्रेम बहुत महान है। यीशु के पास अधिकार है कि वह चाहे तो अपने प्राण दें और चाहें तो न दें, फिर भी वह अपने प्राण दे देने का चयन करते हैं, जो परमेश्वर की इच्छा है। क्योंकि परमेश्वर बहुत प्रेम करते हैं, इसलिये उन्होंने स्वयं में हमें सबकुछ दे दिया। यीशु ने सबकुछ त्याग दिया और माँस और लहू बनने, क्रूस पर मरने, मृतकों में से जी उठने तथा स्वर्गारोहित होने का चयन किया। परमेश्वर ने संसार को बचाने के लिये स्वयं को सौंप दिया ताकि हमने परमेश्वर अथवा लोगों के विरुद्ध जितनी दुष्टता बोली, सोची या की है, उन सभी के लिये वह माँस और लहू का अनन्त बलिदान बन जायें। यीशु प्रतिदिन स्वयं में से, अपने पुनरुत्थित जीवन, प्रेम, सत्य, तथा दुष्ट आत्माओं और हमारे शरीर पर शक्ति और अधिकार में से, निरन्तर देते रहते हैं। वह हमारे अच्छे चरवाहे हैं।

गवाही दें

प्रत्येक व्यक्ति से दो या तीन वाक्यों में यह बताने के लिये कहें कि यह जानना, कि यीशु उनके अच्छे चरवाहे हैं, उनके लिये क्या मायने रखता है?

भजन संहिता 23 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें कई बार पढ़ें।

सामूहिक चर्चा

चर्चा करें कि यीशु, जो अच्छे चरवाहे हैं, आपके लिये क्या करते हैं। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

यीशु मेरी सभी आवश्यकताओं की सदा पूर्ति करते हैं।

यीशु मुझे विश्राम और भोजन देते हैं।

यीशु मुझे ताज़गी और जीवन का जल देते हैं।

यीशु मेरी आत्मा, मन और देह को पुनर्स्थापित और नवीन करते हैं।

यीशु अपनी स्वयं की प्रतिष्ठा के लिये अपनी धार्मिकता तथा न्याय से मुझे अवगत कराते हैं।

चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूँ, तौभी न डरूँगा, क्योंकि यीशु मेरे साथ रहते हैं।

यीशु अपने प्रेम, मेरे साथ अपने सम्बन्ध और अपनी सर्वोच्च शक्ति तथा अधिकार से मुझे सान्त्वना देते हैं।

यीशु मेरे सब शत्रुओं के सामने मेरे लिये भोज का आयोजन करते हैं। यीशु मुझे अपना मुख्य अतिथि बनाते हैं।

यीशु अपनी स्वयं की अनन्त भरपूरी से और परमेश्वर की सम्पूर्ण भलाई से मेरा अभिषेक करते हैं।

निस्सन्देह परमेश्वर की करूणा जीवन भर, माँस और लहू के इस वर्तमान समय में, मेरे साथ-साथ बनी रहेगी। मैं परमेश्वर के धाम में सदा-सर्वदा वास करूँगा।

इन पदों में ऐसी कुछ बातें **क्या** हैं जो आज भी वैसी ही हैं?

यीशु अच्छे चरवाहे हैं जो स्वयं को अपनी भेड़ों के लिये निरन्तर देते रहते हैं।

आज हमारे लिये इनके **क्या** मायने हैं?

हम यीशु में, जो वह हैं, जो उन्होंने किया है, जो वह कर रहे हैं, और जो करने की प्रतिज्ञा वह करते हैं, उसमें विश्राम कर सकते हैं।

इस सत्र में से आप परमेश्वर के विषय में **कौन सी** एक बात सीखते हैं?

परमेश्वर यीशु में हमें अपना सबकुछ दे देते हैं क्योंकि वह हमसे बहुत प्रेम करते हैं।

यीशु में परमेश्वर का यह प्रेम **कितना** बलशाली है? **रोमियों 8:38-39** पढ़ें

यीशु में परमेश्वर का हमारे लिये प्रेम किसी भी वस्तु से कहीं अधिक, यहाँ तक कि हमारी अपनी निर्बलताओं और संसार की दुष्टता से भी अधिक, बड़ा और बलशाली है।

आपका व्यावहारिक प्रतिउत्तर/प्रार्थना **क्या** है?

सत्र 8: पवित्र आत्मा का प्रेम

आत्मा और दुल्हन कहती हैं "आ!" सभी सुनने वाले भी कहें "आ!"
जितने लोग प्यासे हैं, वे सब आयें। जितने लोग जीवन का जल चाहते हैं, वे सब सेंतमेंत लें।

आरम्भिक प्रार्थना

किसी से कहें कि सत्र का आरम्भ करने के लिये प्रार्थना करें।

आराधना

एक समूह के रूप में दो या तीन आराधना के ऐसे गीत चुनिए और गाइए जो परमेश्वर के प्रेम की घोषणा करते हों।

बाइबल अध्ययन

परमेश्वर स्वयं के साथ एक सिद्ध सम्बन्ध में थे, और हैं, और आने वाले हैं। पिता, पुत्र यीशु, और पवित्र आत्मा, एक परिपूर्ण एकत्व हैं, एक में तीन व्यक्ति। एक परमेश्वर। हम पवित्र आत्मा के प्रेम के सम्बन्ध का अध्ययन करेंगे।

परमेश्वर का प्रेम इतना महान है कि यह हमारी समझ से परे है। पवित्र आत्मा का प्रेम उनके स्वयं की ओर कभी संकेत नहीं करता। बल्कि वह हमें प्रकाशन देते हैं, पुष्टि देते हैं, रूपान्तरित करते हैं और हममें निवास करते हैं, जिससे हम पिता के प्रेम और पुत्र यीशु के प्रेम को व्यक्तिगत, शक्तिशाली और आन्तरिक रूप से अनुभव करते हैं।

पवित्र आत्मा हमें **किसकी** बातें बतायेंगे, और **किसकी** महिमा करेंगे? **यूहन्ना 16:13-15** पढ़ें

यीशु की।

परमेश्वर का प्रेम व्यक्तिगत, शक्तिशाली और आन्तरिक रूप से, हमारे हृदयों में **कैसे** डाला गया है?

रोमियों 5:5-8 पढ़ें

हममें निवास करने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा।

रोमियों 8:14-16 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें कई बार पढ़ें।

सामूहिक चर्चा

इन बाइबल पदों में से पवित्र आत्मा के प्रेम के विषय में अपने अवलोकनों पर चर्चा करें। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

परमेश्वर का प्रेम इतना महान है कि जब हम यीशु के स्वयं के उपहार को स्वीकार करते हैं, हम यीशु के आत्मा, परमेश्वर के आत्मा, पवित्र आत्मा को अपने भीतर प्राप्त करते हैं। हम परमेश्वर की सन्तान हैं और परमेश्वर हमारे प्रेमी पिता हैं।

सभी विश्वासी (नर और नारी) 'परमेश्वर के पुत्र' हैं क्योंकि वे उनके आत्मा को प्राप्त करते हैं। ये शब्द, 'परमेश्वर के पुत्र', परमेश्वर के साथ उस सम्बन्ध को दर्शाते हैं जो अब हमें मीरास में मिला है। यह गोद लिया जाना राजकीय परिवार में पहलौठे पुत्र के जन्म के समान है, जिसे पहलौठे पुत्र के सारे कानूनी अधिकार मिलते हैं। इसी कारण हम यीशु के संगी वारिस बनते हैं, जो परमेश्वर के राज्य के राजा हैं।

गवाही दें

प्रत्येक व्यक्ति से दो या तीन वाक्यों में यह बताने के लिये कहें कि यह जानना, कि वे परमेश्वर की सन्तान हैं (राजकीय परिवार के पहलौठे पुत्र के समान), उनके लिये क्या मायने रखता है?

इस सत्र में से आप परमेश्वर के विषय में **कौन सी** एक बात सीखते हैं?

परमेश्वर यीशु के द्वारा हमें अपना सर्वस्व दे देते हैं, वह हमें अपना लेपालकपन का आत्मा देते हैं, क्योंकि परमेश्वर बहुत प्रेम करते हैं।

आपका व्यावहारिक प्रतिउत्तर/प्रार्थना **क्या** है?

सत्र 9: मैं जैसा हूँ वैसे ही स्वीकृति

परमेश्वर के प्रेम में स्थापित। जैसा हूँ वैसा ही स्वीकृत। अनन्तता की ओर बढ़ते हुए। जीवन से भरपूर। मैं सदा के लिये बदल दिया गया हूँ। अति महान 'मैं हूँ' के द्वारा।

आरम्भिक प्रार्थना

किसी से कहें कि सत्र का आरम्भ करने के लिये प्रार्थना करें।

आराधना

एक समूह के रूप में दो या तीन आराधना के ऐसे गीत चुनिए और गाइए जो यह घोषणा करते हों कि मैं जैसा हूँ वैसा ही परमेश्वर ने मुझे स्वीकार कर लिया है।

चार कार्ड्ज़ वर्कशॉप

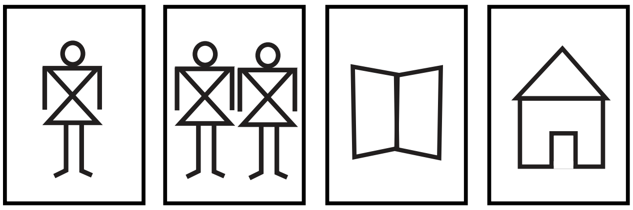

कदम 1: प्रत्येक व्यक्ति एक खाली कागज लेता है और उसे चार हिस्सों में काट लेता है। प्रत्येक व्यक्ति को उनके कार्ड के सामने के हिस्से पर नीचे लिखी वस्तुओं के चित्र बनाने हैं।

कार्ड 1 = मैं   कार्ड 2 = मेरा परिवार   कार्ड 3 = मेरी शिक्षा   कार्ड 4 = मेरा गाँव

कदम 2: प्रत्येक व्यक्ति को उनके चारों कार्ड्ज़ के पीछे की ओर साधारण चित्रों और शब्दों के द्वारा अपना, अपने परिवार का, अपने स्कूल का और अपने समुदाय का वर्णन करना है। किसी भी कार्ड पर कोई नाम न लिखा जाये।

कार्ड 1: मैं अपने बारे में कैसा महसूस करता हूँ? (एक खुश या उदास चेहरे का चित्र बनायें।) क्या मैं महसूस करता हूँ कि सब मुझसे प्रेम करते हैं? क्या मैं महसूस करता हूँ कि मेरे समुदाय के लोग मुझे स्वीकार करते हैं? मैं कौन सा काम अच्छी तरह कर सकता हूँ? मुझे क्या करना पसन्द हैं? मेरा मनपसन्द जन्तु कौन सा है? मेरा मनपसन्द भोजन क्या है? मेरे सपने क्या हैं? मैं किससे डरता हूँ?

कार्ड 2: मेरे परिवार में कौन-कौन हैं? मेरे परिवार का स्वास्थ्य कैसा है? मेरा परिवार किस या कौन से परमेश्वर में विश्वास करता है? मुझ पर अधिकार रखने वाले लोग कैसे हैं? (एक खुश या उदास चेहरे का चित्र बनायें।)

कार्ड 3: मैं अपने जीवन को लेकर कैसा महसूस करता हूँ? (एक खुश या उदास चेहरे का चित्र बनायें।) बचपन में मैंने कौन सी एक बात सीखी थी? जिस व्यक्ति ने मुझे यह सिखाया था वह कैसा व्यक्ति था? मुझे कौन सा विषय सीखना सबसे अधिक पसन्द था? कौन सा विषय सीखना सबसे कठिन था? कौन सा विषय सीखना सबसे आसान था? ऐसे कौन से स्थान हैं जहाँ मैं सुरक्षित महसूस नहीं करता? ऐसे कौन से स्थान हैं जहाँ मैं सुरक्षित महसूस करता हूँ?

कार्ड 4: जहाँ मैं रहता हूँ वहाँ मुझे क्या अच्छा लगता है? जहाँ मैं रहता हूँ वहाँ मुझे क्या अच्छा नहीं लगता? जहाँ मैं रहता हूँ वहाँ के वृद्ध लोग क्या करते हैं? वृद्ध लोग मेरी सहायता कैसे करते हैं?

कदम 3: जब सब व्यक्ति अपने-अपने कार्ड्ज़ पर उपरोक्त जानकारी लिख लें, तो वे अपने-अपने कार्ड्ज़ आपको दे दें। उन्हें उनके चार-चार के सैट में ही रखें।

कदम 4: प्रत्येक व्यक्ति को चार कार्ड्ज़ का ऐसा सैट दें जो उनका नहीं है। प्रत्येक की पहचान गुप्त रहे और किसी को यह न पता चले कि किसे किसके कार्ड्ज़ का सैट दिया गया है।

कदम 5: एक-एक करके प्रत्येक व्यक्ति उन कार्ड्ज़ को पढ़कर सुनाये जो उसे दिये गये हैं।

सामूहिक चर्चा

कार्ड्ज़ के प्रत्येक सैट के परिणामों पर चर्चा करें।

प्रत्येक व्यक्ति अपने विषय में और अपनी परिस्थितियों के विषय में जो महसूस करता है, उसमें **क्या** पारस्परिक पद्यतियाँ या सम्बन्ध हैं?

प्रत्येक व्यक्ति में कुछ भिन्नताएँ **क्या** हैं?

हम सभी स्वीकृत होना चाहते हैं। हम सभी प्रेम पाना चाहते हैं। जब हम दूसरों से स्वीकृति या प्रेम की अपेक्षा करते हैं, तो उनके पास और इस परिस्थिति के पास हमें नियन्त्रित करने की शक्ति आ जाती है।

उत्पत्ति 29:31-35 पढ़ें

सामूहिक चर्चा

लिआः और परमेश्वर के विषय में अपने अवलोकनों पर चर्चा करें। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

पद 31 परमेश्वर लिआः के विषय में क्या जानते थे?

उसे प्रेम नहीं मिला था।

पद 32 लिआः क्या आशा कर रही थी कि पुत्र पैदा होने के परिणामस्वरूप क्या होगा?

उसका पति उससे प्रेम करेगा।

पद 33 क्या लिआः के पुत्र को जन्म देने के परिणामस्वरूप लिआः का पति लिआः से प्रेम करने लगा?
नहीं।

पद 34 लिआः के तीन पुत्रों को जन्म देने के बाद क्या उसका पति उससे प्रेम करने लगा?
नहीं।

पद 35 चार पुत्रों को जन्म देने के बाद लिआः ने क्या कहा?

अब की बार तो मैं यहोवा का धन्यवाद करूँगी।

हमारे प्रेम पाने और स्वीकार किये जाने की आवश्यकता को परमेश्वर देखते हैं। परमेश्वर ने लिआः की पुत्र प्राप्ति की चाहत को पूरा किया, ताकि उसे यह दर्शा सकें कि परमेश्वर स्वयं उसे कितना प्रेम करते हैं। परमेश्वर ने अपनी योजना में भी उसे एक स्थान दिया। उसके चौथे पुत्र से उस गोत्र का उद्भव हुआ, जिससे यीशु, माँस और लहू बने परमेश्वर, आते हैं। पुरातन इस्राएल के बारह गोत्रों में से एक।

जब हम जान जाते हैं कि परमेश्वर हमसे कितना प्रेम करते हैं, कि वह हमें वैसे ही स्वीकार कर लेते हैं जैसे हम हैं, कि हम उनकी दृष्टि में कितने सुन्दर हैं, और यह कि उन्होंने हमें अपनी योजना का हिस्सा बनाने के लिये हमें संसार की सृष्टि से पहले ही चुन लिया था, तभी हम वास्तव में स्वतन्त्र होते हैं क्योंकि फिर हम लोगों के प्रेम और स्वीकृति की अपेक्षा नहीं करते। अब हम इस वास्तविकता में जीने लगते हैं कि उनका प्रेम और उनकी स्वीकृति हमारे लिये पर्याप्त से भी बढ़कर है।

जब हम जान जाते हैं कि हमें वैसे ही स्वीकार कर लिया गया हैं जैसे हम हैं, तब हम क्या करने के लिए सशक्त हो जाते हैं? **रोमियों 15:7** पढ़ें

हम दूसरों को वैसे स्वीकार करने के लिए सशक्त हो जाते हैं जैसे वे हैं, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार हमें वैसे ही स्वीकार कर लिया गया हैं जैसे हम हैं।

इस सत्र में से आप परमेश्वर के विषय में **कौन सी** एक बात सीखते हैं? **प्रेरितों 10:34** पढ़ें

परमेश्वर सब लोगों को वैसे ही स्वीकार कर लेते हैं जैसे वे हैं। वह मुझे वैसा ही स्वीकार करते हैं जैसा मैं हूँ।

आपका व्यावहारिक प्रतिउत्तर/प्रार्थना **क्या** है?

सत्र 10: पहचान – आत्मा से जन्मे

परमेश्वर: जो आत्मा हैं माँस और लहू से जन्मे, कि उन सभी के लिये माँस और लहू का बलिदान बनें जो माँस और लहू से जन्मे हैं, ताकि वे माँस और लहू होते हुए आत्मा से जन्म ले सकें।

आरम्भिक प्रार्थना

किसी से कहें कि सत्र का आरम्भ करने के लिये प्रार्थना करें।

आराधना

एक समूह के रूप में दो या तीन आराधना के ऐसे गीत चुनिए और गाइए जो यह घोषणा करते हों कि मैं आत्मा से जन्मा हूँ, और परमेश्वर की सन्तान हूँ।

बाइबल अध्ययन

जैसा कि हम सीख चुके हैं कि वे सभी विश्वासी, जो यीशु द्वारा दिये गये स्वयं के माँस और लहू के बलिदान को स्वीकार करते हैं, वे परमेश्वर के आत्मा—पवित्र आत्मा—को अपने भीतर प्राप्त करते हैं। यह हमारी वर्तमान मीरास है, हम परमेश्वर की सन्तान हैं (राजकीय परिवार में पहलौठे पुत्र के समान), मसीह के संगी वारिस हैं, इस पृथ्वी पर, दुष्टता से क्षतिग्रस्त इस संसार में परमेश्वर के राज्य में जी रहे हैं।

परमेश्वर ने हमारे जैसा बनने का चयन किया क्योंकि वह हमसे प्रेम करते हैं, और इतिहास के उस क्षण में, यीशु ने पवित्र आत्मा के बीज के द्वारा माँस और लहू के रूप में एक स्त्री से जन्म लिया, ताकि यीशु द्वारा दिये गये स्वयं के माँस और लहू के अनन्त बलिदान पर विश्वास और उसे स्वीकार करने के द्वारा हम जो माँस और लहू से जन्मे हैं, आत्मा से जन्म ले सकें।

यूहन्ना 1:12-13 पढ़ें

हम परमेश्वर की कहानी, उनकी सच्ची प्रेम कहानी, बाइबल में से अध्ययन करेंगे कि माँस और लहू से जन्मे मनुष्य को आत्मा से जन्म लेने की आवश्यकता क्यों थी।

1 कुरिन्थियों 15:47-51 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें कई बार पढ़ें।

सामूहिक चर्चा

इन बाइबल पदों में से प्रथम मनुष्य (जो माँस और लहू से जन्मा) और दूसरे मनुष्य (यीशु, जो आत्मा से थे परन्तु जिन्होंने माँस और लहू से जन्म लिया) के विषय में अपने अवलोकनों पर चर्चा करें। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

प्रथम मनुष्य **किससे** बना था?

मिट्टी से।

यीशु द्वारा दिये गये स्वयं के माँस और लहू के बलिदान को स्वीकार करने से पहले हमें **किसका** स्वरूप, समानता और पहचान मिली थी?

मिट्टी से बने प्रथम मनुष्य का।

यीशु द्वारा दिये गये स्वयं के माँस और लहू के बलिदान को स्वीकार करने के बाद हमें **किसका** स्वरूप, समानता और पहचान मिली है?

दूसरे मनुष्य—स्वर्ग के प्रभु—यीशु का।

यह हमारी वर्तमान मीरास है। हमें यीशु की पहचान मिली है, हम, जो माँस और लहू हैं, परन्तु अब उनके आत्मा से जन्मे हैं, परमेश्वर की सन्तान (राजकीय परिवार में पहलौठे पुत्र के समान), मसीह के संगी वारिस हैं, इस पृथ्वी पर, दुष्टता से क्षतिग्रस्त इस संसार में परमेश्वर के राज्य में जी रहे हैं।

1 कुरिन्थियों 15:50-55 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें कई बार पढ़ें।

सामूहिक चर्चा

इन बाइबल पदों में से मिट्टी से बने मनुष्य (जो माँस और लहू से जन्मा) और यीशु, जो आत्मा से थे (जो माँस और लहू बन गये) की पहचान के विषय में अपने अवलोकनों पर चर्चा करें। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

माँस और लहू से जन्मे मनुष्य का स्वभाव और पहचान **क्या** है?

बर्बाद, बेईमान और विनाश की ओर अग्रसर, और मृत्यु का भागी।

यीशु का स्वभाव और पहचान **क्या** है?

कभी बर्बाद नहीं, ईमानदार, अनन्त, जीवन का भागी।

प्रथम मनुष्य एक ऐसा बीज बन गया जो बर्बाद है, क्योंकि उसने दुष्ट के छल और भले तथा बुरे के ज्ञान को प्राप्त करने, उसमें शामिल होने और उसके साथ एक हो जाने का चयन किया। परिणामस्वरूप सब लोगों का जन्म ऐसे स्वभाव के साथ होता है जो बर्बाद है। दूसरे मनुष्य यीशु ने, पवित्र आत्मा के बीज के द्वारा, एक ऐसा बीज जो कभी बर्बाद नहीं है, माँस और लहू के रूप में एक स्त्री से जन्म लिया। यीशु माँस और लहू का एक सिद्ध बलिदान हैं।

रोमियों 5:14-19 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें कई बार पढ़ें।

सामूहिक चर्चा

इन बाइबल पदों में से मिट्टी से बने मनुष्य (जो माँस और लहू से जन्मा) के परिणामों और यीशु, जो आत्मा से थे (जो माँस और लहू बन गये) के परिणामों के विषय में अपने अवलोकनों पर चर्चा करें। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

प्रथम मनुष्य के अपराध का परिणाम **क्या** है?

पद 16 दण्ड की आज्ञा दी गयी।

पद 17 मृत्यु ने राज्य किया।

दूसरे मनुष्य द्वारा उन सभी के लिये, जो उसे स्वीकार करते हैं, दिये जाने वाले स्वयं के उपहार का परिणाम **क्या** है?

पद 16 दण्ड की आज्ञा से मुक्त, धर्मी ठहरे।

पद 17 यीशु में राज्य करता हुआ जीवन।

कुलुस्सियों 2:13-15 पढ़ें

प्रथम मनुष्य के अपराध का परिणाम **क्या** है?

पद 13 परमेश्वर तथा अन्य मनुष्यों के विरुद्ध अपराधों में मृत तथा उजाड़ने वाली भ्रष्ट शारीरिक स्वार्थी लालसाओं में फँसा हुआ।

दूसरे मनुष्य द्वारा स्वयं को उन सभी के लिये, जो उसे स्वीकार करते हैं, उपहार स्वरूप दिये जाने का परिणाम **क्या** है?

पद 13 उजाड़ने वाली भ्रष्ट शारीरिक स्वार्थी लालसाओं पर विजयी बनाकर जीवित किया क्योंकि हमारे सारे अपराध क्षमा कर दिये गये हैं।

पद 14 अब दोषी नहीं।

पद 15 सब प्रधानताओं और अधिकारों पर विजयी, जो अब पराजित हैं और शक्तिहीन बन्दी हैं।

यह हमारी वर्तमान मीरास है। मृत्यु के दण्ड, न्याय तथा दोष से मुक्त करके हमें सही बनाया गया है और इस जीवन में हमारे शरीर तथा उन दुष्ट आत्माओं और अधिकारियों पर शासन दिया गया है जो यीशु के अधिकार तथा शासन के विरुद्ध खड़े होते हैं। अब शैतान तथा दुष्ट आत्माएँ हम पर दोष नहीं लगा सकते क्योंकि क्रूस पर यीशु की विजय के द्वारा उनकी सारी शक्ति तथा हथियार उनसे छीन लिये गये हैं।

हम दुष्टता से क्षतिग्रस्त इस संसार में माँस और लहू हैं जो आत्मा से जन्मे हैं, यीशु की विजय में जीवित किये गये हैं।

हमारी भविष्य में भी एक मीरास है।

1 कुरिन्थियों 15:20-23 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें कई बार पढ़ें।

सामूहिक चर्चा

इन बाइबल पदों में से मिट्टी से बने मनुष्य (जो माँस और लहू से जन्मा) के परिणामों और यीशु, जो आत्मा से थे (जो माँस और लहू बन गये) के परिणामों के विषय में अपने अवलोकनों पर चर्चा करें। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

मृतकों में से **कौन** जी उठा है?

यीशु।

जब यीशु अपनी सम्पूर्ण महिमा में इस संसार में लौटेंगे, उस समय ऐसी देहों के साथ **कौन** जी उठेंगे, जो न तो वृद्ध होंगी, न रोगी होंगी, और न ही पुरानी होंगी?

वे सभी, जो यीशु के स्वयं के उपहार को, उनके माँस और लहू के बलिदान को स्वीकार करते हैं और परिणामस्वरूप परमेश्वर की सन्तान हैं तथा आत्मा से जन्मे हैं।

प्रकाशितवाक्य 1:18 पढ़ें

वह **कौन** है जो आत्मा के द्वारा माँस और लहू का एक सिद्ध बलिदान बना, मरा, एक सिद्ध देह के साथ जी उठा, स्वर्गारोहित हुआ, युगानुयुग जीवित है और मृत्यु तथा अनन्तता के ऊपर अधिकारी है?

यीशु।

प्रकाशितवाक्य 1:5-6 पढ़ें

वह **कौन** है जो विश्वासयोग्य साक्षी, मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहलौठा, सर्वोच्च अधिकारी तथा सबके ऊपर हाकिम है?

यीशु।

यीशु ने यह सब हमारे लिये क्यों किया?

क्योंकि वह हमसे प्रेम करते हैं।

जब हम यीशु के स्वयं के उपहार को और उनके माँस और लहू के बलिदान को स्वीकार करते हैं, तो परमेश्वर की सन्तान बनने तथा आत्मा से जन्म लेने के साथ-साथ हम **क्या** बन जाते हैं?

राजा (शैतान, दुष्ट आत्माओं और हमारे अपने शरीर के ऊपर हाकिम) और याजक (परमेश्वर तथा अन्य लोगों के साथ प्रेमी सम्बन्ध)।

यीशु का पुनरुत्थान पहला सिद्ध शारीरिक पुनरुत्थान था, सो अब हम न केवल दुष्टता से क्षतिग्रस्त इस संसार में जी सकते हैं, बल्कि दुष्टता से मुक्त नवीकृत संसार में उन सिद्ध पुनरुत्थित देहों को प्राप्त करके, जो न तो वृद्ध होंगी, न पुरानी होंगी और न ही मरेंगी, अनन्त अवस्था में रहने की भावी आशा में भी जी सकते हैं। जब यीशु पृथ्वी पर लौटेंगे, तब हम, जिन्होंने यीशु के स्वयं के उपहार को और उनके माँस और लहू के बलिदान को स्वीकार किया है, अपने सिद्ध पुनरुत्थित शरीरों को प्राप्त करेंगे।

मनुष्यजाति के अपराध के परिणामस्वरूप परमेश्वर की सृष्टि दुष्टता से क्षतिग्रस्त हो गयी। असमानता, अत्याचार, दुष्टता और मृत्यु शासन करने लगी। क्योंकि परमेश्वर हमसे बहुत प्रेम करते हैं, इसलिये यीशु ने पवित्र आत्मा के बीज के द्वारा स्त्री से जन्म लेकर माँस और लहू बनने का चयन किया। वह अपनी स्वयं की सृष्टि में मीरास के प्रथम पुत्र के रूप में उतर आये, ताकि हम सभी पुत्र, माँस और लहू में से आत्मा से जन्मे पुत्र बन सकें, कि हम वर्तमान की और भविष्य की अपनी सारी मीरास को प्राप्त कर सकें। हालेलुयाह!

इस सत्र में से आपने परमेश्वर के विषय में **कौन सी** एक बात सीखी?

परमेश्वर बहुत प्रेम करते हैं और यीशु का माँस और लहू का जीवन, मृत्यु तथा पुनरुत्थान परमेश्वर की साक्षी तथा प्रमाण है।

आपका व्यावहारिक प्रतिउत्तर/प्रार्थना **क्या** है

सत्र 11: प्रिय में स्वीकृति

दो मानवीय आवश्यकताएँ: स्वीकृति पाने की चाहत और प्रेम किये जाने की चाहत।
परमेश्वर ने हमें प्रिय (यीशु, जो सबसे प्यारे हैं) में (विशेष सम्मान के साथ) स्वीकृत बनाया है।

आरम्भिक प्रार्थना

किसी से कहें कि सत्र का आरम्भ करने के लिये प्रार्थना करें।

आराधना

एक समूह के रूप में दो या तीन आराधना के ऐसे गीत चुनिए और गाइए जो यह घोषणा करते हों कि परमेश्वर मुझसे प्रेम करते हैं, और मुझे मसीह में विशेष सम्मान और आशिषें दी गयी हैं।

बाइबल अध्ययन

जैसा कि हम सीख चुके हैं कि जब सभी विश्वासी यीशु द्वारा दिये गये स्वयं के माँस और लहू के बलिदान को स्वीकार करते हैं, वे परमेश्वर के आत्मा—पवित्र आत्मा—को अपने भीतर प्राप्त करते हैं। यह हमारी वर्तमान मीरास है। हम परमेश्वर की सन्तान हैं (राजकीय परिवार में पहलौठे पुत्र के समान), मसीह के संगी वारिस हैं, इस पृथ्वी पर, दुष्टता से क्षतिग्रस्त इस संसार में परमेश्वर के राज्य में जी रहे हैं।

परमेश्वर ने हमारे जैसा बनने का चयन किया क्योंकि वह हमसे प्रेम करते हैं, और इतिहास के उस क्षण में, यीशु ने पवित्र आत्मा के बीज के द्वारा माँस और लहू के रूप में एक स्त्री से जन्म लिया, ताकि यीशु द्वारा दिये गये स्वयं के माँस और लहू के सिद्ध व अनन्त बलिदान पर विश्वास और उसे स्वीकार करने के द्वारा हम जो माँस और लहू से जन्मे हैं, आत्मा से जन्म ले सकें।

हम परमेश्वर की कहानी, उनकी सच्ची प्रेम कहानी, बाइबल में से पिता के प्रेम, आशीष, इच्छा (हृदय की चाहत) और अनन्तता के लिये उद्धार के उद्देश्य का अध्ययन करेंगे।

इफिसियों 1:3-14 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें कई बार पढ़ें।

सामूहिक चर्चा

अपने अवलोकनों पर चर्चा करें। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

परमेश्वर की इच्छा तथा योजना **क्या** है जो उन्होंने हम पर प्रकट की है? **पद 9-10** पढ़ें

समय की पूर्णता में स्वर्गीय स्थानों की और पृथ्वी पर की सभी वस्तुएँ मसीह में एक हैं।

पिता परमेश्वर ने हमें (भूतकाल में) **क्या** दिया है, जो वर्तमान में हमें मिल भी चुका है? **पद 3** पढ़ें

सब प्रकार की आत्मिक आशीष।

यह आशीष **कहाँ** है?

स्वर्गीय स्थानों में।

यह सब प्राप्त करने के लिये हम **किसमें** हैं या **किसके** साथ एक हैं?

मसीह यीशु।

वर्तमान में, जब मसीह स्वर्गीय स्थानों में अधिकार के स्थान पर विराजमान हैं, तब हम भी उनके साथ बैठे हैं। वर्तमान में मसीह में हमें प्रत्येक आत्मिक आशीष मिली हुई है। अगला पद इन आशीषों का कुछ विवरण प्रस्तुत करता है।

हम मसीह में (वर्तमान में) **कौन** हैं, जो पिता परमेश्वर के द्वारा (भूतकाल में) हमें दिया है? इसे व्यक्तिगत बनायें और अपनें उत्तर में 'मैं हूँ' डालें। **पद 4-6** पढ़ें

उदाहरण: मैं प्रेम में चुना गया हूँ, पवित्र, निर्दोष और गोद लिया गया पुत्र हूँ, प्रिय (सबसे प्यारे) में (जैसा हूँ वैसा ही) स्वीकार किया गया हूँ, अपने पिता की इच्छा में हूँ, जो कि उनके हृदय की चाहत है।

यीशु परमेश्वर के 'प्रिय' पुत्र हैं, पिता के सर्वोच्च प्रेम-पात्र। हम भी उनके प्रेम के 'पुत्र' हैं, (जैसे हैं वैसे ही) स्वीकार किये गये हैं। वर्तमान में हम पिता और पुत्र के सिद्ध प्रेमी सम्बन्ध की आत्मिक वास्तविकता में जी रहे हैं। हम उनके हृदय की चाहत हैं।

हम मसीह में (वर्तमान में) **कौन** हैं, जो पिता परमेश्वर के द्वारा (भूतकाल में) हमें दिया है? इसे व्यक्तिगत बनायें और अपनें उत्तर में 'मैं हूँ' डालें। **पद 7-8** पढ़ें

उदाहरण: मैं यीशु द्वारा दिये गये स्वयं के माँस और लहू के बलिदान के द्वारा, परमेश्वर के अनुग्रह के कभी न समाप्त होने वाले धन के द्वारा अनन्तता के लिये छुड़ाया गया और क्षमा किया गया हूँ।

हम मसीह में (वर्तमान में) **कौन** हैं, जो पिता परमेश्वर के द्वारा (भूतकाल में) हमें दिया गया है? इसे व्यक्तिगत बनायें और अपनें उत्तर में 'मुझे मिल गया/गयी है' डालें। **पद 11-12** पढ़ें

उदाहरण: मैंने (वर्तमान में) अपनी मीरास को ले लिया है, क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से निर्धारित मेरी नियति और उनके हृदय की इच्छा थी।

हम मसीह में (वर्तमान में) **कौन** हैं, जो पिता परमेश्वर के द्वारा (भूतकाल में) हमें दिया है? इसे व्यक्तिगत बनायें और अपनें उत्तर में 'मुझ पर लगी/मैं हूँ' डालें। **पद 13-14** पढ़ें

उदाहरण: पवित्र आत्मा की छाप मुझ पर लगी है, जो मेरी (वर्तमान की और भविष्य की) मीरास की पूर्ति की गारण्टी है।

स्मरण रखें, वर्तमान में, जब मसीह स्वर्गीय स्थानों में अधिकार के स्थान पर विराजमान हैं, तब हम भी उनके साथ बैठे हैं। वर्तमान में मसीह में हमें प्रत्येक आत्मिक आशीष मिली हुई है।

इफिसियों 1:21-23 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें कई बार पढ़ें।

सामूहिक चर्चा

अपने अवलोकनों पर चर्चा करें। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

वर्तमान में और भविष्य में यीशु को **कितनी** शक्ति और अधिकार मिला है? **पद 21** पढ़ें

सब प्रकार की प्रधानता, अधिकार, सामर्थ, प्रभुत्व और प्रत्येक नामांकित वस्तु के ऊपर।

यीशु की परिपूर्णता **कौन** है? **पद 23** पढ़ें

सभी विश्वासी, जिन्होंने यीशु द्वारा दिये गये स्वयं के माँस और लहू के बलिदान को स्वीकार किया है।

सभी विश्वासियों की, जिन्होंने यीशु द्वारा दिये गये स्वयं के माँस और लहू के बलिदान को स्वीकार किया है, परिपूर्णता **कौन** है?

मसीह यीशु।

इफिसियों 2:4-9 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें कई बार पढ़ें।

सामूहिक चर्चा

अपने अवलोकनों पर चर्चा करें। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

वर्तमान में हमें मसीह यीशु में **क्या** मिला है? **पद 5-6** पढ़ें

हमें मसीह के साथ जीवित किया गया है। हमारे शरीर की लालसाओं तथा शैतान तथा सब दुष्ट आत्माओं पर मसीह की शक्ति और अधिकार देकर स्वर्गीय स्थानों में उनके साथ बैठने के लिये उठाया गया है।

परमेश्वर ने हमें मसीह के साथ जीवित **क्यों** किया और मसीह की शक्ति और अधिकार देकर स्वर्गीय स्थानों में उनके साथ बैठने के लिये **क्यों** उठाया? **पद 4-8** पढ़ें

हमारे लिये परमेश्वर के महान प्रेम के कारण। इन सबके द्वारा परमेश्वर हमारे प्रति अपना असीम प्रेम, करुणा, कृपा के भण्डार और आशिषों का धन प्रकट कर सकते हैं।

उद्धार परमेश्वर की ओर से एक उपहार **क्यों** है? **पद 8-9** पढ़ें

वह स्वयं के मांस और लहू के बलिदान को उपहार स्वरूप देने के द्वारा हमें हमारे शारीरिक अभिमान की दुष्टता से बचाता है। ताकि कोई घमण्ड न कर सके।

इफिसियों 1:15-19 पढ़ें

प्रेरित पौलुस सन्तों के लिये **क्या** प्रार्थना करता है?

पद 17 कि परमेश्वर उन्हें ज्ञान और प्रकाश का आत्मा दे ताकि वे उन्हें बेहतर रीति से जान सकें।

पद 18 कि परमेश्वर उनके मनों को खोलें ताकि वे उनके सत्य को देख सकें, ताकि यीशु द्वारा दिये गये स्वयं के माँस और लहू के बलिदान को स्वीकार करने वाले सभी विश्वासियों की (वर्तमान और भविष्य की) आशिषों और आशा को वे जान सकें।

पद 19 कि वे उनकी शक्ति की महानता को जान सकें।

इस सत्र में से आप परमेश्वर के विषय में **कौन सी** एक बात सीखते हैं?

परमेश्वर का प्रेम, सामर्थ्य और आशिषों का धन असीम है। वह मुझे अपनी स्तुति और महिमा के रूप में देखते हैं।

आपका व्यावहारिक प्रतिउत्तर/प्रार्थना **क्या** है?

सत्र 12: सम्बन्ध

सेमिनार सहभागी: 'दाखलता के सम्बन्ध के विषय में सीखा, यीशु से प्राप्ति का समय रहा, पिता की इच्छा के प्रति समर्पित हुआ, यह मेरे लिये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।'

आरम्भिक प्रार्थना

किसी से कहें कि सत्र का आरम्भ करने के लिये प्रार्थना करें।

आराधना

एक समूह के रूप में दो या तीन आराधना के ऐसे गीत चुनिए और गाइए जो यीशु में एकता की, या यीशु के साथ दाखलता और डालियों के जैसे सम्बन्ध की, या यीशु के प्रेम में जीने की घोषणा करते हों।

कहानी

कल्पना करें कि आप एक विशाल दाखलता की एक शाखा हैं।

आप दाखलता के मुख्य तने से जुड़े हुए हैं और बाग़बान की इच्छा की पूर्ण अधीनता में हैं।

आप केवल एक ही काम करते हैं, वह यह कि वहाँ लटके रहते हैं, और कुछ नहीं, बस मुख्य तने से लटके रहते हैं।

अब क्योंकि आप मुख्य तने से लटके रहते हैं, इसलिये दाखलता की सारी पौष्टिकता स्वाभाविक रूप से जड़ों से लेकर तने से होती हुई आप में बह रही है। इसका जल, इसके पौष्टिक तत्व; दाखलता में से सबकुछ आप में आ रहा है।

आप बस इतना कर रहे हैं कि दाखलता से लटके हुए हैं और इसकी पौष्टिकता को प्राप्त कर रहे हैं।

एक दिन, आपको एक 'झुनझुनी' सी महसूस होने लगती है। आप पाते हैं कि आप बड़े हो गये हैं।

फलों के छोटे-छोटे गुच्छे बनने लगते हैं। पॉप (प्रेम), पॉप, पॉप (आनन्द, शान्ति), पॉप, पॉप, पॉप (धीरज, कृपा, भलाई), पॉप, पॉप, पॉप (विश्वास, नम्रता, संयम)।

जब सूर्य की उष्णता और वर्षा की बूँदें आप पर पड़ती हैं, आपके भीतर जीवन का जल और दाखलता के पौष्टिक तत्व बहते जाते हैं। यह कैसे हो रहा है? आप तो कुछ भी नहीं कर रहे!

आप बस इतना कर रहे हैं कि दाखलता से लटके हुए हैं और इसकी पौष्टिकता को प्राप्त कर रहे हैं।

बाग़बान की इच्छा भी यही है।

स्वाभाविक आयाम में, जल ऊपर से नीचे की ओर बहता है, जैसे वर्षा, नदियाँ, जल-कुण्ड इत्यादि। एक दाखलता को जीवित रहने के लिये जल की आवश्यकता है। जल के बिना यह मर जायेगी। दाखलता को जल की आपूर्ति के लिये मुख्य तने से पीना पड़ता है—मुख्य तने से प्राप्त करना पड़ता है। जीवित रहने और फल लाने के लिये शाखा को जल पीना ही पड़ता है।

जैसा स्वाभाविक आयाम में है, वैसा ही आत्मिक आयाम में भी है क्योंकि परमेश्वर ने सब वस्तुओं को ऐसा ही सृजा है।

आत्मिक आयाम में, जीवन का जल ऊपर से नीचे की ओर बहता है, परमेश्वर के सिंहासन से यीशु के द्वारा शाखाओं में आता है। शाखाएँ वर्षा में से नहीं पीतीं—यह जल भूमि में जाता है और शाखाएँ वास्तव में मुख्य तने से पीती हैं, दाखलता की सारी पौष्टिकता को जड़ से और मुख्य तने से प्राप्त करती हैं।

यूहन्ना 15:1-8 पढ़ें

इन बाइबल पदों पर मनन करें और इन्हें कई बार पढ़ें।

सामूहिक चर्चा

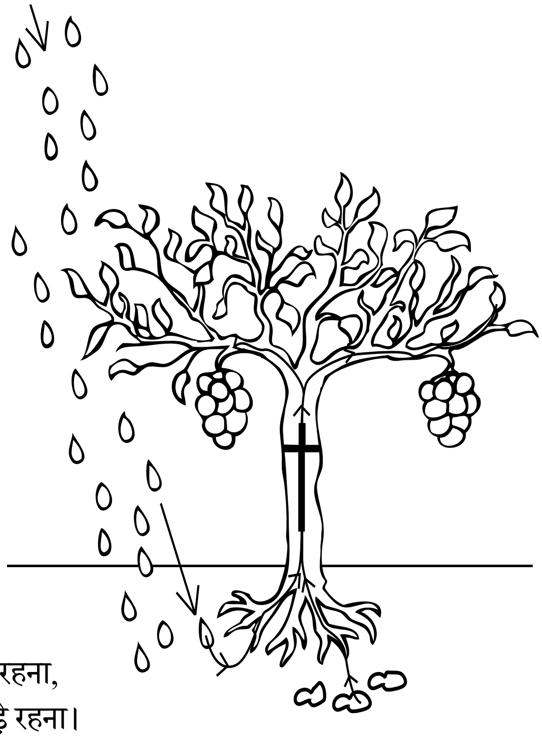

अपने अवलोकनों पर चर्चा करें।
उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

बाग़बान **कौन** है?

परमेश्वर पिता

दाखलता का मुख्य तना **कौन** है?

यीशु

दाखलता के मुख्य तने से लगी हुई शाखा **कौन** है?

मैं

बने रहने का **क्या** अर्थ है?

यीशु कहते हैं कि हम उनमें बने रहें। (एक दिये गये स्थान, अवस्था, सम्बन्ध या अपेक्षा में) बने रहने का अर्थ है: जुड़े रहना, निवास करना, डटे रहना, उपस्थित रहना, लगे रहना या खड़े रहना।

मैं बना **कैसे** रह सकता हूँ?

अपने उत्तरों को अपनी कार्य-पुस्तक में लिख लीजिए।

स्वाभाविक में जीवित रहने और फल लाने के लिये शाखा के लिये पौष्टिक तत्व अर्थात भोजन खाना भी अनिवार्य है।

यूहन्ना 4:34 पढ़ें

सन्दर्भ

इन पदों में यीशु एक बहिष्कृत स्त्री से बात कर रहे हैं। यीशु का जन्म पुरातन इस्राएल के बारह गोत्रों में से एक में हुआ था। अतीत के इस समय में पुरातन इस्राएल का कोई व्यक्ति सामरियों के किसी भी व्यक्ति से बात नहीं करता था, विशेषकर एक ऐसी स्त्री से, जो अपने ही लोगों के द्वारा बहिष्कृत की गयी हो, किन्तु यीशु (माँस और लहू के भाव से) इस बहिष्कृत स्त्री के पास गये, उसके साथ जीवन के जल (परमेश्वर के आत्मा, पवित्र आत्मा) के विषय में बात की और उसे दर्शाया कि वह कौन हैं—इस जीवन के जल के स्रोत हैं। जब यीशु के शिष्य लौटते हैं, यीशु उन्हें अपने भोजन और पके खेतों के विषय में सिखाते हैं।

इस बहिष्कृत स्त्री से बात करने, यह दर्शाने कि वह कौन हैं और जिन लोगों ने उन्हें अभी तक नहीं जाना है, उनकी कटनी के विषय में बात करने, के मध्य में यीशु प्रकट करते हैं कि उनका भोजन क्या है।

यीशु ने क्या कहा कि उनका पोषण करने वाला भोजन **क्या** है?

पिता की इच्छा को करना और उस काम को पूरा करना जिसे करने के लिये उन्हें भेजा गया है।

जैसा स्वाभाविक आयाम में है, वैसा ही आत्मिक आयाम में भी है क्योंकि परमेश्वर ने सब वस्तुओं को ऐसा ही सृजा है।

आत्मिक रूप से जब हम हमारे पिता की इच्छा के प्रति समर्पित होते हैं, जब हम उनकी उपस्थिति में, आराधना में, उनके वचन में उनके साथ समय बिताते हैं, उनसे उनकी सारी भलाई प्राप्त करते रहते हैं, तब हम उनके आत्मा के द्वारा दिन-प्रतिदिन अधिक से अधिक बदलते जायेंगे।

जब हम यीशु से प्राप्त करते हैं, पिता परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पित रहते हैं, तब हम किसके स्वरूप में बदलते जाते हैं? **2 कुरिन्थियों 3:17-18** पढ़ें

यीशु के।

जब हम पिता की इच्छा की अधीनता में रहते हुए जीवन के जल में से पीते हैं, तो यीशु ने क्या घोषणा की कि **क्या** होगा?

यूहन्ना 15:8 पढ़ें

निश्चित है कि फल लगेंगे। *जैसा स्वाभाविक आयाम में है, वैसा ही आत्मिक आयाम में भी है क्योंकि परमेश्वर ने सब वस्तुओं को ऐसा ही सृजा है।*

जब हम पिता की इच्छा की अधीनता में आते हैं और उनकी उपस्थिति में से प्रतिदिन पीते हैं, तो पवित्र आत्मा हमें अधिक से अधिक मसीह जैसा बनाने के लिये बदलते जायेंगे। उनका चरित्र हमारा चरित्र बन जाता है। यीशु वृक्ष में यीशु फल लगते हैं—आत्मा के फल।

जब हम पिता परमेश्वर की इच्छा की अधीनता में आते हैं, तो हमें यीशु से **कौन से** आत्मिक फल और ईश्वरीय स्वभाव अर्थात यीशु के गुण प्राप्त होते हैं? **गलातियों 5:22-23** पढ़ें

प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, संयम।

इन फलों का उत्पादन **कौन** करता है?

पुत्र यीशु मसीह के द्वारा पवित्र आत्मा के माध्यम से परमेश्वर पिता, जो बाग़बान हैं।

जब हमें यह प्रकाशन मिल जाता है कि परमेश्वर हमसे कितना प्रेम करते हैं, जब हम अपने पिता की उपस्थिति में उनकी इच्छा की अधीनता में आ जाते हैं, तो अपनी इच्छा के अनुसार वह स्वयं को हम पर और अधिक प्रकट करेंगे और हम परमेश्वर की परिपूर्णता से परिपूर्ण हो जायेंगे। जब हम प्रतिदिन उनकी उपस्थित में रहते हैं, यीशु से प्राप्त करते हैं, अपने पिता की अधीनता में रहते हैं, तो वह हमें बदल डालेंगे, क्योंकि यही उनकी इच्छा है।

इस सत्र में से आपने परमेश्वर के विषय में **कौन सी** एक बात सीखी?

आपका व्यावहारिक प्रतिउत्तर/प्रार्थना **क्या** है?

सत्र 13: सम्बन्ध –
अन्य लोगों की वैसे स्वीकृति जैसे वे हैं

पुनर्मेल हो चुके (सहमति में लाये गये)। पुनर्स्थापित हो चुके (स्वास्थ्य, आरोग्यता और जीवन-शक्ति की अवस्था में वापिस लाये गये)। नवीकृत हो चुके (पुनर्जागृत किये गये और प्रभावशाली बनाये गये)।

आरम्भिक प्रार्थना

किसी से कहें कि सत्र का आरम्भ करने के लिये प्रार्थना करें।

आराधना

एक समूह के रूप में दो या तीन आराधना के ऐसे गीत चुनिए और गाइए जो परमेश्वर के प्रेम और रूपान्तरणकारी शक्ति की घोषणा करते हों।

दस बीज सामूहिक अभ्यास

जैसा कि हम सीख चुके हैं कि हमारा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध परमेश्वर के साथ है। यदि हम अपने पिता की इच्छा के प्रति समर्पित हैं और उनके साथ समय बिताते हैं, उनसे सारा पोषण प्राप्त करते हैं, तब परमेश्वर प्रतिदिन हमें यीशु के चरित्र में बदलते जायेंगे।

परमेश्वर हमारी भावनाओं की चिन्ता करते हैं, हम क्या महसूस करते हैं, अन्य लोग हमसे कैसा बर्ताव करते हैं और हम अन्य लोगों के साथ कैसा बर्ताव करते हैं।

सामूहिक अभ्यास

सब लोग एक घेरा बनाकर एक दूसरे की ओर मुँह करके बैठ जायें। घेरे के बीच में 10 बीज वर्कशीट रखें (*परमेश्वर का राज्य कार्यक्रम पुस्तिका* के पेज 45 की फोटोकॉपी कर लें) ताकि सभी लोग उसे देख सकें। वर्कशीट के पास धान या चने या कोई अन्य उपलब्ध 10 बीज रखें। आपके समूह में जितने लोग हैं वही आपके समूह की संख्या है। आपके समूह में 3 से 12 लोग हो सकते हैं। यदि 12 से अधिक लोग हैं तो दो समूह बनायें। यदि 24 से अधिक लोग हैं तो तीन समूह बनायें और बढ़ती संख्या के साथ ऐसा ही करते रहें। प्रत्येक समूह के मध्य में 10 बीज और एक 10 बीज वर्कशीट रखी हुई हो।

प्रत्येक व्यक्ति को एक-एक करके समूह से बोलने का अवसर दिया जाता है। प्रत्येक को बोलने का बराबर अधिकार प्राप्त है। प्रत्येक व्यक्ति का महत्त्व सबके बराबर है। प्रत्येक व्यक्ति समूह के एक महत्त्वपूर्ण अंग के रूप में काम करता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने समूह में बताता है कि उनके अनुसार उनका समाज उन्हें वर्कशीट के कौन से कॉलम में देखता है। या तो उनका समाज उन्हें महत्त्वहीन समझता है, या कुछ महत्त्व का समझता है, या फिर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समझता है।

प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह समझना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि किसी के लिये इसमें शर्म की कोई बात नहीं है कि उनका समाज उन्हें कैसे देखता है। कोई समाज किसी व्यक्ति को कैसे देखता है, वह अनेक बातों के परिणामस्वरूप होता है, जिनमें से अधिकतर बातें उस व्यक्ति के नियन्त्रण के बाहर होती हैं। सही उत्तर है: आपका क्या मानना है कि आपका समाज आपको कैसे देखता है।

एक बार जब प्रत्येक व्यक्ति सबको बता देता है कि उनका क्या मानना है कि उनका समाज उन्हें कौन से कॉलम (महत्त्वहीन या कुछ महत्त्व या अत्यन्त महत्त्वपूर्ण) में देखता है, तब समूह के सभी लोग यह चर्चा करते हैं कि चुनिन्दा कॉलम में 10 बीज रखते हुए वे अपने समूह के परिणामों को कैसे प्रस्तुत करेंगे। सभी 10 बीजों का उपयोग अनिवार्य है। 10 बीज पूरे समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उदाहरण 1: यदि 8 लोगों के समूह में से 5 लोग मानते हैं कि उनका समाज उन्हें महत्त्वहीन समझता है और 2 लोग मानते हैं कि उनका समाज उन्हें कुछ महत्त्व का समझता है और 1 व्यक्ति मानता है कि उनका समाज उन्हें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानता है, तो 10 बीज इस प्रकार से रखे जायेंगे कि 7 बीज महत्त्वहीन कॉलम में हों, 2 बीज कुछ महत्त्व के कॉलम में हों और 1 बीज अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कॉलम में हो।

उदाहरण 2: यदि 6 लोगों के समूह में से 3 लोग मानते हैं कि उनका समाज उन्हें महत्त्वहीन समझता है और 3 लोग मानते हैं कि उनका समाज उन्हें कुछ महत्त्व का समझता है और 0 व्यक्ति मानता है कि उनका समाज उन्हें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानता है, तो 10 बीज इस प्रकार से रखे जायेंगे कि 5 बीज महत्त्वहीन कॉलम में हों, 5 बीज कम महत्त्व के कॉलम में हों और 0 बीज अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कॉलम में हो।

सामूहिक चर्चा

अपने अवलोकनों पर चर्चा करें। उत्तरों को अपने पन्नों पर लिखें।

जो लोग यह मानते हैं कि समाज उन्हें महत्त्वहीन और कम महत्त्व वाले व्यक्ति समझता है, उन्हें यह मानने के लिये सशक्त कैसे बनाया जा सकता है कि समाज उन्हें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण व्यक्ति मानता है?

1. उनका आदर करें, उन्हें अन्य लोगों के समान महत्त्व दें और उन्हें समाज में शामिल करें।
2. उन्हें एक स्थान, एक भूमिका, समाज में शामिल होने का अवसर दें।
3. उनके साथ-साथ चलें, जैसे वे हैं वैसे ही उन्हें स्वीकार करें और उन्हें समझने के लिए समय दें।
4. उन्हें बोलने का और उनके जीवन में परमेश्वर की भलाई की साक्षी देने का अवसर दें।
5. उन्हें परमेश्वर की महानता तथा परमेश्वर में उनकी पहचान, मूल्य और महत्त्व को जानने और उसकी साक्षी देने का अवसर दें।
6. उन्हें उनके वरदान पहचानने (प्रत्येक व्यक्ति के पास कम से कम एक वरदान तो होता ही है) और उस वरदान का उपयोग करने का अवसर दें।

बाइबल अध्ययन

लूका 8:43-55 पढ़ें

सन्दर्भ

इन पदों में एक बहिष्कृत महिला यीशु का स्पर्श प्राप्त करने के लिए अपने आप को जोखिम में डाल देती हैं। उनकी संस्कृति के अनुसार वह एक अशुद्ध महिला थी और उसके द्वारा यीशु को छू लेने से यीशु भी अशुद्ध गिने जाते।

सामूहिक चर्चा

पद 43-44 में यीशु के एक स्पर्श से एक बहिष्कृत स्त्री के साथ **क्या** हुआ?

उसे (शारीरिक रूप से) चंगाई मिली।

पद 45 में यीशु ने **क्या** कहा?

मुझे किसने छुआ?

यीशु ने यह नहीं कहा कि मुझे क्या छुआ, बल्कि किसने छुआ? किसने का अर्थ है एक व्यक्ति। यीशु उसे महत्त्वपूर्ण समझते हैं और उसे खोजने के लिये रुकने के द्वारा उसका आदर करते हैं, उसे अपना समय और अपना ध्यान देते हैं। वह उनकी चंगाई के सामर्थ्य को प्राप्त कर चुकी है। याद रखें कि यीशु संसार की दृष्टि में एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति की मृत्युशय्या पर पड़ी लड़की को बचाने जा रहे हैं।

पद 47 में उस स्त्री ने **क्या** किया?

उस स्त्री ने देखा कि वह छिप नहीं सकती, वह सामने आयी और यीशु के सामने दण्डवत किया और साक्षी दी कि यीशु के एक स्पर्श से उसे चंगाई प्राप्त हो गयी है।

न केवल यीशु ने एक बहिष्कृत स्त्री को एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के तौर पर जाना, जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर के स्वरूप में सृजी गयी थी, बल्कि यीशु के मात्र एक स्पर्श से अब सारा समाज, शिष्य और स्वयं यीशु इस स्त्री की बात सुन रहे हैं।

उसे एक स्थान मिला। उसे एक आवाज़ मिली। वह एक मूल्यवान व्यक्ति है। वह महत्त्वपूर्ण है।

पद 48 में यीशु उस स्त्री को अपने शिष्यों और सारे समाज के सामने **क्या** बुलाते हैं?

परमेश्वर की बेटी अर्थात सन्तान।

यीशु का एक स्पर्श शारीरिक, मानसिक और आत्मिक परिपूर्णता को सम्पूर्ण करता है। उसे एक स्थान, एक आवाज़, परमेश्वर की सन्तान के तौर पर पुनर्स्थापित पहचान मिली।

इस सत्र में से आपने परमेश्वर के विषय में **कौन सी** एक बात सीखी?

आपका व्यावहारिक प्रतिउत्तर/प्रार्थना **क्या** है?

सत्र 14: सम्बन्ध - समानता

'सीखा कि यीशु में सम्बन्ध समानता में पुनर्स्थापित हो जाते हैं...यह सन्देश विश्वासियों और अविश्वासियों के पास...सारे समाज में पहुँचना ज़रूरी है।' सेमिनार सहभागी

आरम्भिक प्रार्थना

किसी से कहें कि सत्र का आरम्भ करने के लिये प्रार्थना करें।

आराधना

एक समूह के रूप में दो या तीन आराधना के ऐसे गीत चुनिए और गाइए जो परमेश्वर के प्रेम और चंगाई की शक्ति की घोषणा करते हों।

हम परमेश्वर की कहानी, उनकी सच्ची प्रेम कहानी, बाइबल में से कुछ पहलुओं का अध्ययन करेंगे कि कैसे परमेश्वर पुरुषों और स्त्रियों को एक समानता में देखते हैं।

परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, जिसमें पुरुष और स्त्री भी शामिल हैं, उसे देखकर परमेश्वर ने **क्या** कहा? **उत्पत्ति 1:31** पढ़ें

यह बहुत ही अच्छा है।

दुष्टता से क्षतिग्रस्त इस संसार में रहते हुए परमेश्वर के राज्य में सम्बन्धों को समझने के लिये हमें आदि में वापिस जाना होगा। **उत्पत्ति 1:27-28** पढ़ें

परमेश्वर ने पुरुष को **किसके** स्वरूप में सृजा था?

परमेश्वर के अपने स्वरूप में

परमेश्वर ने स्त्री को **किसके** स्वरूप में सृजा था?

परमेश्वर के अपने स्वरूप में

परमेश्वर ने एक समान आशीष **किसे** दी?

पुरुष और स्त्री को

परमेश्वर ने सारी पृथ्वी पर एक समान अधिकार (शासन करने की शक्ति) **किसे** दी?

पुरुष और स्त्री को

उत्पत्ति 2:18-20 पढ़ें

इन पदों में परमेश्वर स्त्री को एक ऐसा सहायक बताते हैं जो पुरुष से मेल खाता है। इसका अर्थ है, ऐसा कोई जो साथ रहे, जो एक जैसे माँस का बना है, परन्तु फिर भी भिन्न है। ऐसा कोई जो पुरुष के बराबर है, जो मिलकर एक हो सकते हैं। ऐसा कोई जो पुरुष को उस व्यक्ति के रूप में पूर्ण बनाता है जिसे परमेश्वर के स्वरूप में सृजा गया है।

परमेश्वर के वचन के पुराने नियम में सहायक शब्द अधिकतर परमेश्वर के लिये प्रयुक्त किया जाता था, जो मनुष्य की सहायता के लिये उसके साथ आ जाते थे। परमेश्वर के वचन के नये नियम में स्वयं यीशु परमेश्वर के आत्मा को अर्थात परमेश्वर की उपस्थिति को हमारा सहायक बताते हैं।

क्या परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को समानता में सृजा था या असमानता में?

समानता में

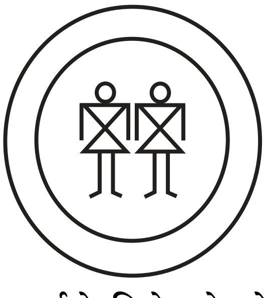

भलाई के लिये सृजे गये

पुरुष और स्त्री समस्त सृष्टि में से परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति हैं। मनुष्य (नर और नारी दोनों) ने परमेश्वर के श्वास को प्राप्त किया, दोनों एक समान हैं, एक-दूसरे के पूरक हैं और अपने सृष्टिकर्ता परमेश्वर तथा एक-दूसरे के साथ एक समान सम्बन्ध में हैं।

पुरुष और स्त्री **भलाई के लिये सृजे गये** थे...एक समान-एक समान

क्या आज का संसार सिद्ध है?

नहीं।

परमेश्वर के सिद्ध संसार को बदलने के लिये कुछ हुआ। याद रखें कि परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को सारी पृथ्वी पर अधिकार दिया था, जिसमें परमेश्वर के सिद्ध संसार की देखभाल करना भी शामिल था। उन्होंने उनके विजयी जीवन के लिये उन्हें सबकुछ दिया था।

परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को एक स्वतन्त्र इच्छा के साथ सृजा था, कि वे मृत्यु या जीवन चुनें, कि परमेश्वर की बुद्धि तथा जीवन के वृक्ष में भागीदार बनने को चुनें, या दुष्ट के छल तथा भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष में भागीदार बनने को चुनें।

परमेश्वर ने मनुष्य (नर और नारी दोनों) को **क्या** चयन दिया था? **उत्पत्ति 2:8-9** और **उत्पत्ति 2:15-17** पढ़ें

मृत्यु और जीवन का।

उत्पत्ति के तीसरे अध्याय के अन्त से पहले ही प्रथम पुरुष और प्रथम स्त्री ने परमेश्वर की बुद्धि तथा जीवन के वृक्ष में भागीदार बनने को चुनने की बजाय दुष्ट के छल तथा भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष में भागीदार बनने को चुन लिया। पुरुष और स्त्री ने अन्ततः जीवन और फलवन्तता की ओर ले जाने वाले भरोसे, अन्तरंगता और परमेश्वर की बुद्धि को स्वीकार करने वाले सम्बन्ध की बजाय अविश्वास, दूरी और परमेश्वर की बुद्धि को ठुकराने वाले सम्बन्ध को चुना, जो अन्त में उन्हें मृत्यु और विनाश की ओर ले गया।
पुरुष और स्त्री ने इस सिद्ध संसार में मृत्यु और दुष्टता को प्रवेश करने दिया। **उत्पत्ति 3:1-7** और **उत्पत्ति 3:16-17** पढ़ें

अब पुरुष और स्त्री का परस्पर सम्बन्ध **कैसा** है, समान या असमान?

असमान

दोनों ही नियन्त्रण और अधिकार प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। स्त्री पुरुष को नियन्त्रण में रखने का प्रयास करती है और पुरुष स्त्री पर अधिकार रखने का प्रयास करता है।

उत्पत्ति 4:7 पढ़ें

उत्पत्ति 3:16-17 के सन्दर्भ में लालसा शब्द का अर्थ है पीछे दौड़ना और नियन्त्रण करने तथा अपने लाभ के लिये उपयोग करने का प्रयास करना। **उत्पत्ति 3:16-17** के सन्दर्भ में प्रभुता शब्द का अर्थ है अधिकार रखना और अत्याचार करना।

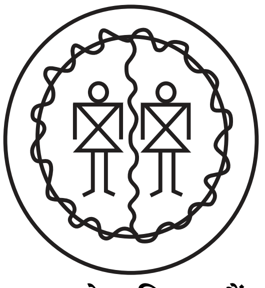

दुष्टता से क्षतिग्रस्त हैं

दुष्टता से क्षतिग्रस्त स्त्री अब पुरुष के साथ **क्या** करना चाहती है?

पीछे दौड़ना और नियन्त्रण करना तथा अपने लाभ के लिये उपयोग करना चाहती है।

दुष्टता से क्षतिग्रस्त पुरुष अब स्त्री के साथ **क्या** करना चाहता है?

अधिकार रखना और अत्याचार करना चाहता है।

पुरुष और स्त्री **दुष्टता से क्षतिग्रस्त हैं**...असमान-असमान

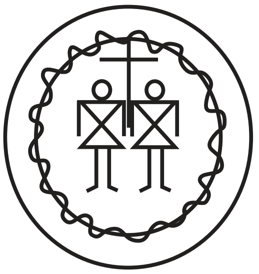

उत्तमता के लिये पुनर्स्थापित किये गये

परन्तु कहानी यहीं समाप्त नहीं हो जाती। परमेश्वर अपने महान प्रेम में होकर अपनी सृष्टि में माँस और लहू का मनुष्य बनकर उतर आये और मनुष्य के अपराध के परिणामस्वरूप जितनी क्षति, रोग, मृत्यु और दुष्टता प्रवेश कर गयी थी उसे क्रूस पर अपने ऊपर ले लिया, यीशु का पुनरुत्थान हुआ, वह सारी क्षति, रोग, मृत्यु और दुष्टता पर विजयी हुए, और हमें उत्तमता के लिये पुनर्स्थापित कर दिया है।

पुरुष और स्त्री **उत्तमता के लिये पुनर्स्थापित किये गये** हैं...एक समान-एक समान

परन्तु कहानी यहीं समाप्त नहीं हो जाती। परमेश्वर अपने महान प्रेम में होकर हमें सामर्थ्य और अधिकार देते हैं कि दुष्टता से क्षतिग्रस्त संसार में हम दुष्ट के झूठों को ठुकराएँ, सत्य को जानें ताकि छले न जायें, और स्वयं पर केन्द्रित हमारी चाहतों पर, दुष्ट पर और दुष्टता पर विजयी होकर जीवन व्यतीत करें।

जब हम नियन्त्रण करने और अधिकार रखने की अपनी चाहत को त्याग देते हैं और अपने पिता की इच्छा के प्रति निरन्तर समर्पण की अवस्था में रहते हैं, यीशु के माँस और लहू बनकर आने, मरने, मृतकों में से जी उठने और ऊँचे पर उठा लिये जाने के द्वारा हमें जो कुछ मिला है उसे स्वीकार करते हैं, तब हमारा पुराना स्वयं मर जाता है और हम दुष्टता से क्षतिग्रस्त संसार में सचमुच वर्तमान में जीने लगते हैं।

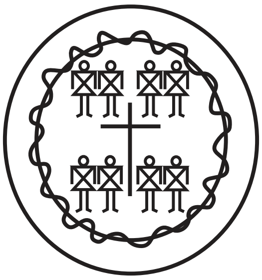

चंगाई के लिये भेजे गये

परमेश्वर अपने महान प्रेम में होकर अपने पुनर्स्थापन और चंगाई के मिशन में हमें एक भाग देते हैं। सत्र 15 और 16 में परमेश्वर की कहानी, बाइबल, में से परमेश्वर के प्रेम और उस भाग का अध्ययन करेंगे जो वह हमें अपने चंगाई के मिशन में देते हैं।

पुरुष और स्त्री **चंगाई के लिये भेजे गये** हैं...एक समान-एक समान

इस सत्र में से आपने परमेश्वर के विषय में **कौन सी** एक बात सीखी?

आपका व्यावहारिक प्रतिउत्तर/प्रार्थना **क्या** है?

सत्र 15: सम्बन्ध - शिष्यता

जब हम अपनी जीवनयात्रा में आगे बढ़ते हैं, तो परिस्थिति चाहे जैसी भी हो, हम चाहे जहाँ भी जायें, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी परमेश्वर सदा हमारे संग रहते हैं...अन्तरंग और व्यक्तिगत तौर पर।

आरम्भिक प्रार्थना

किसी से कहें कि सत्र का आरम्भ करने के लिये प्रार्थना करें।

आराधना

एक समूह के रूप में दो या तीन आराधना के ऐसे गीत चुनिए और गाइए जो यह घोषणा करते हों कि परमेश्वर हमारे संग हैं।

बाइबल अध्ययन

याद रखें कि इस यात्रा के आरम्भ में हमने सीखा था कि शिष्यता का आरम्भ परमेश्वर को और आपके लिये उनके प्रेम को जानने से होता है, और यह जानने से होता है कि वह कौन हैं, उन्होंने क्या किया है और वह क्या करेंगे। परमेश्वर के साथ उनके वचन में, उनकी उपस्थिति में, आराधना में, प्रार्थना में और अन्य विश्वासियों के साथ संगति में समय व्यतीत करने से परमेश्वर को जानने में सहायता मिलती है।

शिष्यता, हममें और अन्य लोगों में निरन्तर चलने वाली एक दैनिक प्रक्रिया है। जैसा कि हमने दाखलता सम्बन्ध के सत्र में सीखा था कि हमारे चरित्र में परिवर्तन और वृद्धि लाना पवित्र आत्मा का कार्य है। परमेश्वर को स्वयं को अन्य लोगों पर प्रकट करने के लिये हमारी आवश्यकता नहीं है किन्तु हमारे लिये अपने महान प्रेम के कारण उन्होंने हमें अपनी योजना का एक अंग बनाने के लिये चुन लिया। यदि अन्य लोग परमेश्वर को, उनके सत्य को, उनके प्रेम और सामर्थ्य को जानना चाहते हैं, तो अवश्य है कि पहले वे परमेश्वर के विषय में सीखें।

हम **किसके** शिष्य हैं?

यीशु के

सारी शक्ति और अधिकार **किसके** पास है? **मत्ती 28:18-20** पढ़ें

यीशु के पास

इन तीन पदों में यीशु ने अपने शिष्यों से **कौन से** चार काम करने के लिये कहा?

1: जाओ

इस सन्दर्भ में 'जाओ' का अर्थ यह भी हो सकता है कि जब हम अपनी जीवनयात्रा में आगे बढ़ते हैं (हम चाहे जैसी भी परिस्थिति में हों), जब हम एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर यात्रा करते हैं (हम चाहे जिस भी क्षेत्र में हों), उस परिस्थिति पर और प्रत्येक क्षेत्र पर यीशु को सारी शक्ति और अधिकार प्राप्त है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति यीशु के साथ हमारी दैनिक जीवनयात्रा में चाहे कहीं पर भी हो, वह हममें से प्रत्येक के साथ, प्रत्येक शिष्य के भीतर अपने आत्मा के द्वारा अन्तरंग और व्यक्तिगत तौर पर हैं।

2: बपतिस्मा दो

इस सन्दर्भ में बपतिस्मा देने का अर्थ है जलमग्न करना, अथवा बार-बार डुबोना, साफ करना, यीशु और उसकी पहचान के साथ एक हो जाना। उसकी मृत्यु और उसके पुनरुत्थान के साथ एक हो जाना। यीशु को स्वीकार करने का अर्थ है यीशु को, उनकी पहचान को, उनके आत्मा को और पिता को प्राप्त करना। उनमें पूरी तरह डूब जाने का अर्थ है उनकी शक्ति और अधिकार को प्राप्त करना, और हृदय तथा मन से समर्पण करना, उनके आत्मा के द्वारा वर्तमान तथा भविष्य के लिये चिरस्थायी, सकारात्मक परिवर्तन प्राप्त करना।

3: सिखाओ
प्रभावशाली शिक्षा का अर्थ है अन्य लोगों को यीशु के बारे में सीखने के लिये, उनके साथ अपने सम्बन्ध में वृद्धि करने के लिये और अन्य लोगों को सिखाने के लिये सशक्त करना। सिखाने का अर्थ अन्य लोगों को यह दिखाना नहीं है कि हम कितना जानते हैं या अपने आप को सही प्रमाणित करना चाहते हैं। बल्कि लोगों को यीशु के शिष्य बनाने के सन्दर्भ में सिखाने का अर्थ है प्रत्येक जाति के लोगों, पुरुषों और स्त्रियों (एक समान-एक समान) को, वयस्कों और बालकों (एक समान-एक समान) को, यह सिखाना कि वे परमेश्वर में डुबकी लगा लें और पूर्ण रूप से उनके लिए समर्पित हो जाएँ।

4: शिष्य बनाओ
इस सन्दर्भ में शिष्य बनाने का कार्य प्रमुख कार्य है। हम लोगों को बपतिस्मा देने के द्वारा (यीशु को, उनकी पहचान को, उनके आत्मा को और पिता को स्वीकार करने के लिये सशक्त बनाकर) और उन्हें शिक्षा देने के द्वारा (यीशु के विषय में सीखने और उनमें वृद्धि करने के लिये सशक्त बनाकर) शिष्य बनाते हैं।

मनुष्यों को यीशु के शिष्य बनाना अपनी योजना की पूर्ति के लिये परमेश्वर की एक रणनीति है **(इफिसियों 1:9-10)।** शिष्य बनाने का कार्य पवित्र आत्मा अपने शिष्यों में और उनके द्वारा करते हैं। परमेश्वर ने अपनी योजना हमारे सामने—अपने शिष्यों के सामने—प्रकट कर दी है, और हमारे लिये अपने महान प्रेम के कारण उन्होंने हममें से प्रत्येक को अपनी योजना में एक भूमिका दी है।

जब हम यीशु के विषय में *सीखें,* जब हम यीशु के साथ अपने सम्बन्ध के द्वारा प्रतिदिन यीशु को अधिक से अधिक *जानें* और उन्हें जानें जो इस जीवनयात्रा में हमारे साथ आगे बढ़ रहे हैं, जब यीशु स्वयं को हमारे साथ बाँटें, हम यीशु के बारे में अन्य लोगों को *बतायें,* जब यीशु हममें सेवाकार्य करें तो हम यीशु के नाम में, उनके आत्मा के द्वारा अन्य लोगों की सेवा करने के द्वारा यीशु की *सेवा करें,* तब परमेश्वर की योजना पूर्ण हो जाती है।

प्रत्येक शिष्य के भीतर पवित्र आत्मा हैं, जो यीशु के गवाह हैं। आपकी साक्षी यह है कि आप अपने भीतर निवास करने वाली मसीह की परिवर्तनकारी शक्ति के द्वारा वैसा व्यक्ति बनें जैसा बनने के लिये परमेश्वर ने आपको सृजा है। प्रत्येक शिष्य के पास एक गवाही है और वही यीशु की साक्षी है।

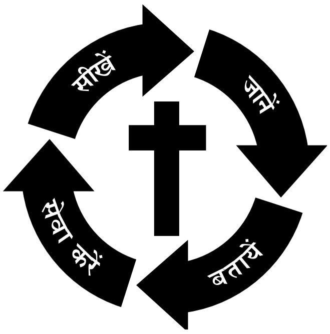

साक्षी
यीशु का शिष्य बनने से पहले आप **किस** प्रकार के व्यक्ति थे?

यीशु के शिष्य के तौर पर आप **किस** प्रकार के व्यक्ति हैं जो यह प्रकट करता है कि यीशु ने आप में और आपके लिये क्या परिवर्तन किया है?

जब आपने यीशु द्वारा दिये गये स्वयं के माँस और लहू के बलिदान को स्वीकार करने और यीशु का शिष्य बनने का निर्णय लिया, उस समय आपके जीवन में **क्या** परिस्थिति थी?

वह सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात **क्या** थी जिसके कारण आपने यीशु द्वारा दिये गये स्वयं के माँस और लहू के बलिदान को स्वीकार करने और यीशु का शिष्य बनने का निर्णय लिया?

वर्तमान में आपके जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन **क्या** आया है?

प्रत्येक व्यक्ति—एक-एक करके—अपनी गवाही इस प्रकार दें (प्रत्येक व्यक्ति दो मिनट से कम समय ले) जैसे किसी गैरमसीही को दे रहे हैं। मसीही शब्दों, जैसे कि धर्मी और उद्धार, का उपयोग न करें, बल्कि समझाएँ कि आपके जीवन में उद्धार के क्या मायने हैं।

आपका व्यावहारिक प्रतिउत्तर/प्रार्थना **क्या** है?

सत्र 16: सम्बन्ध – परमेश्वर का राज्य

हम उसके जैसे ही बन जाते हैं जिसकी हम आराधना करते हैं।

आरम्भिक प्रार्थना

किसी से कहें कि सत्र का आरम्भ करने के लिये प्रार्थना करें।

आराधना

एक समूह के रूप में दो या तीन आराधना के ऐसे गीत चुनिए और गाइए जो यह घोषणा करते हों कि यीशु राजा हैं!

याद रखें कि इस यात्रा के आरम्भ में हमने सीखा था कि परमेश्वर स्वयं को और अपनी योजना को प्रकट करना चाहते हैं, जो यह है कि स्वर्ग और पृथ्वी में की सभी वस्तुओं को एक में, अर्थात मसीह यीशु के अधिकार तथा शासन के अधीन एकत्र किया जाये। यीशु परमेश्वर के राज्य के शासक हैं।

शब्द अध्ययन

राज्य का अर्थ किसी राज्य के ऊपर शासन करने का स्वत्वाधिकार या अधिकार या शक्ति तथा उस शासन या अधिकार की अधीनता में आने वाला राज्य या प्रान्त दोनों होता है।

परमेश्वर का अर्थ है सर्वोच्च ईश्वर, जिन्हें हम जानते हैं कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हैं।

परमेश्वर के राज्य का अर्थ है स्वर्ग और पृथ्वी के ऊपर शासन करने के लिये यीशु का स्वत्वाधिकार या अधिकार या शक्ति। यीशु परमेश्वर के राज्य के शासक हैं। सत्र 10 *आत्मा से जन्मे* में हमने सीखा था कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए हमें उसके राजा को स्वीकार करना होगा। यीशु मसीह के सन्देश और सेवाकार्य तथा उनके चंगाई के मिशन में उनके शिष्यों की भूमिका को समझने के लिये परमेश्वर के राज्य की छवि एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है।

बाइबल अध्ययन

लूका 4:43 और **प्रेरितों 1:1-4** पढ़ें

यीशु ने परमेश्वर के राज्य के विषय में प्रचार किया और शिक्षा दी, परमेश्वर के राज्य को प्रदर्शित किया, और वही परमेश्वर के राज्य के शासक हैं।

यीशु के अनुसार उनके माँस और लहू बनकर आने से **क्या** पूरा हो रहा था? **लूका 4:18-19** पढ़ें

1. कंगालों को सुसमाचार का प्रचार
2. टूटे मन वालों को चंगाई
3. बन्दियों को छुटकारा
4. अन्धों को दृष्टिदान
5. कुचले हुओं को छुड़ाना
6. घोषणा करना कि ये सब होने के लिये यह परमेश्वर के निर्धारित समय का आरम्भ है।

परमेश्वर का राज्य यीशु मसीह में पृथ्वी पर, दुष्टता से क्षतिग्रस्त संसार में, आ चुका है।

यीशु ने यूहन्ना को क्या बताया कि इस बात का प्रमाण **क्या** है कि परमेश्वर का राज्य/स्वर्ग का राज्य पृथ्वी पर आ चुका है? **मत्ती 11:3-5** पढ़ें

1. अन्धे देखते हैं
2. लंगड़े चलते फिरते हैं
3. कोढ़ी शुद्ध किये जाते हैं
4. बहिरे सुनते हैं
5. मुर्दे जिलाए जाते हैं
6. कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है

पुराने नियम में उस दिन को लेकर अनेक नबूवतें की गयीं हैं जब अन्धे देखेंगे, लंगड़े चलेंगे और बहिरे सुनेंगे। यह केवल आत्मिक चंगाई की बात नहीं करता है। यीशु ने प्रकट किया कि परमेश्वर का राज्य सम्पूर्ण चंगाई है: आत्मिक, शारीरिक और मानसिक। सम्पूर्ण परिपूर्णता और शान्ति।

परमेश्वर पिता ने यीशु को दुष्टता से क्षतिग्रस्त संसार में (जो दुष्ट के प्रभाव और मनुष्य के अधिकार तथा नियन्त्रण की चाहत के अधीनस्थ है) भेजा कि बन्दियों को छुटकारा दिया जाये, टूटे मन वालों को चंगाई दी जाये और यह घोषणा की जाये कि परमेश्वर का राज्य आ चुका है। जो लोग यीशु द्वारा दिये गये स्वयं के माँस और लहू के बलिदान को स्वीकार करते हैं, वे सदा-सर्वदा के लिये बचा लिये जाते हैं। मृत्यु के राज्य से निकाले जाते हैं और जीवन के राज्य में लौटा लिये जाते हैं।

मत्ती 19:13-15 (**मरकुस 10:13-16** और **लूका 18:15-17** भी) पढ़ें

हम **क्या** सीखते हैं कि बच्चों के प्रति यीशु का क्या दृष्टिकोण है?

हालाँकि यीशु एक बच्चे के विश्वास और भरोसे की तुलना परमेश्वर के राज्य से कर रहे थे, फिर भी, यीशु द्वारा बच्चों में सेवाकार्य करने के लिये रुकना शक्तिशाली है और तीनों सुसमाचारों में शामिल किया गया है। दुष्टता से क्षतिग्रस्त संसार में उस समय की संस्कृति यह थी कि बच्चे वयस्कों की तुलना में कम मूल्यवान थे। शिष्य इस संसार की संस्कृति का पालन कर रहे थे और अभी तक परमेश्वर के राज्य की संस्कृति में नहीं जी रहे थे। अपने कार्यों से यीशु अपने शिष्यों को दिखा रहे थे कि दुष्टता से क्षतिग्रस्त संसार में परमेश्वर का राज्य कैसा दिखता है।

यीशु का वयस्कों की तुलना में बच्चों के प्रति दृष्टिकोण **कैसा** है, एक समान या असमान?

एक समान

सामूहिक चर्चा

समूह में चर्चा करें कि परमेश्वर के राज्य के प्रति आपकी क्या मान्यता है।

1. परमेश्वर तथा अन्य लोगों के साथ पुनर्स्थापित सम्बन्ध, पुरुष, स्त्री, लड़का, लड़की...एक समान
2. निर्धन तथा धनी शक्तिशाली बनते हैं...एक समान
3. एक समान लोगों का समाज, जो एक दूसरे का निर्माण करता है
4. यीशु में विश्वास करने और जीने वाले सभी लोगों को शामिल किया जाना
5. इंसाफ और शान्ति के साथ समाज का निर्माण
6. सत्य और प्रेम के द्वारा बन्दियों को छुटकारा
7. ईमानदार कार्यनीतियाँ संस्कृति बन जाती हैं

परमेश्वर का राज्य यीशु में प्रकट हुआ है।

यीशु ने हमें यह जिम्मेदारी दी है कि हम उनके आत्मा के द्वारा, उनकी शक्ति और अधिकार के साथ, दुष्टता से क्षतिग्रस्त संसार में जीवन व्यतीत करें और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये परमेश्वर के राज्य की प्रगति का अंग बनें।

परमेश्वर के साथ उनके वचन में, उनकी उपस्थिति में, आराधना में, प्रार्थना में, अन्य विश्वासियों के साथ संगति में समय व्यतीत करते हुए, यीशु से प्राप्त करते हुए, दुष्टता से क्षतिग्रस्त इस संसार में यीशु की विजय में जीवन व्यतीत करते हुए, उनके महान प्रेम की साक्षी देते हुए और शिष्य बनाते हुए हम परमेश्वर को, हमारे लिये उनके प्रेम को जितना अधिक जानते हैं, उतना ही अधिक हम वर्तमान में पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य में जीवन व्यतीत करते हैं।

इस सत्र में से आपने परमेश्वर के विषय में **कौन सी** एक बात सीखी?

आपका व्यावहारिक प्रतिउत्तर/प्रार्थना **क्या** है?

प्रार्थना

इफिसियों 3:14-21 *इसलिए मैं परमपिता के आगे झुकता हूँ। उसी से स्वर्ग में या धरती पर के सभी वंश अपने अपने नाम ग्रहण करते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह महिमा के अपने धन के अनुसार अपनी आत्मा के द्वारा तुम्हारे भीतरी व्यक्तित्व को शक्तिपूर्वक सुदृढ़ करे। और विश्वास के द्वारा तुम्हारे हृदयों में मसीह का निवास हो। तुम्हारी जड़ें और नींव प्रेम पर टिकें। जिससे तुम्हें अन्य सभी संत जनों के साथ यह समझने की शक्ति मिल जाये कि मसीह का प्रेम कितना व्यापक, विस्तृत, विशाल और गम्भीर है। और तुम मसीह के उस प्रेम को जान लो जो सभी प्रकार के ज्ञानों से परे है ताकि तुम परमेश्वर की सभी परिपूर्णताओं से भर जाओ।*

अब उस परमेश्वर के लिये जो अपनी उस शक्ति से जो हममें काम कर रही है, जितना हम माँग सकते हैं या जहाँ तक हम सोच सकते हैं, उससे भी कहीं अधिक कर सकता है, उसकी कलीसिया में और मसीह यीशु में अनन्त पीढ़ियों तक सदा सदा के लिये महिमा होती रहे। आमीन। (ERV)

महत्त्वहीन	कुछ महत्त्व	अत्यन्त महत्त्वपूर्ण